रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE

छावनी परिषद देहरादून
CANTT BOARD DEHRADUN

G20 भारत 2023 INDIA

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Supported By
Urban Development Directorate, Govt. of Uttarakhand

Knowledge Partner
Social Development for Communities FOUNDATION

दून कैन्ट स्वच्छता चौपाल

संगोष्ठी विषय

कचरा प्रबंधन | प्रौद्योगिकी | चक्रिलता

फरवरी 3-4, 2023

संगोष्ठी रिपोर्ट 2023

यह प्रकाशन छावनी परिषद देहरादून की संपत्ति है।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह रिपोर्ट छावनी परिषद देहरादून द्वारा अपने नॉलेज पार्टनर ***सोशल डेवलपमेंट फॉर कम्यूनिटीज फाउंडेशन***, जो देहरादून स्थित एक गैर-लाभकारी संस्था है, के साथ मिलकर तैयार की गई है।

इस प्रकाशन में सभी सामग्रियों का प्रयोग आभारोक्ति के साथ किया जा सकता है।

संपर्क:

छावनी परिषद, देहरादून
गढ़ी, देहरादून कैंट (उत्तराखण्ड) - 248003

दूरभाष: 0135-2756814
ई-मेल: ceodehr-stats.nic.in
हेल्पलाइन: 0135-2759860
वेबसाईट: https://dehradun.cantt.gov.in

विषयसूची

आभार	02
दून कैंट स्वच्छता चौपाल के विषय में: कार्यसूची	03
स्वच्छता चौपाल कार्यक्रम	04
घटनाक्रम: प्रथम दिवस	06
घटनाक्रम: द्वितीय दिवस	20
प्रतिज्ञा	31
प्रदर्शित कम्पनियां	32
प्रतिभागियों की सूची	42
फोटो गैलरी	44
मीडिया कवरेज	48
हमारे प्रतिभागियों ने क्या कहा	50

आभार

देहरादून छावनी परिषद, द्वारा आयोजित प्रथम दून छावनी स्वच्छता चौपाल, 2023 अपशिष्ट प्रबंधन, प्रौद्योगिकी और चक्रिलता पर केंद्रित दो दिवसीय शिखर सम्मेलन है। देहरादून छावनी परिषद इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अपने टीम के सभी सदस्यों से प्राप्त सहयोग व समर्थन के लिए आभार व्यक्त करती है।

हम उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त) का प्रथम दिवस में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होने के लिए आभार व्यक्त करते हैं। हम माननीय शहरी विकास मंत्री, उत्तराखंड सरकार, श्री प्रेमचंद अग्रवाल, जो समापन सत्र में मुख्य अतिथि थे, का भी बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं। समापन समारोह की अध्यक्षता माननीय कृषि, सैनिक कल्याण एवं ग्रामीण विकास मंत्री, उत्तराखंड सरकार, श्री गणेश जोशी ने की व विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय विधायक, श्रीमती सविता कपूर उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए हम इनके आभारी हैं।

हम पूरे भारत से 51 कंपनियों, स्टार्टअप्स और स्वयं सहायता समूहों की उपस्थिति के लिए सब को धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने अपशिष्ट प्रबंधन में अपने उत्पादों और प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया।

हम अपने पैनलिस्टों और कई ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों के प्रतिनिधियों के भी आभारी हैं जो चर्चा के दौरान उपस्थित थे और उन्होंने अपने बहुमूल्य सुझाव हमें दिये। छावनी के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं और शिक्षकों का बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने लोक नृत्य और नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए और दर्शकों को कार्यक्रम से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया।

साहस फाउंडेशन का आभार, जिन्होंने हमें इस कार्यक्रम को जीरो-वेस्ट इवेंट बनाने के लिए हमारी मदद की।

ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं का भी बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने स्वयंसेवकों के रूप में कार्य किया और पंजीकरण स्टॉल का प्रबंधन किया और शिखर सम्मेलन के समग्र संचालन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

हम अपने नॉलेज पार्टनर सोशल डेवलपमेंट फॉर कम्युनिटीज (SDC) फाउंडेशन द्वारा इस कार्यक्रम के आयोजन और इस रिपोर्ट को तैयार करने में सहयोग के लिए भी आभारी हैं।

दून कैंट स्वच्छता चौपाल: कार्यसूची

एक समय अपने पेड़ों, नहरों, औपनिवेशिक शैली के घरों और एक शांत रवैये के लिए जाने जाना वाला यह देहरादून अब एक बड़ा, व्यस्त शहर है और इससे भी बड़ा व्यस्ततम शहर बनने की राह पर है। इसके समक्ष आगामी चुनौतियाँ प्रदूषण का बढ़ता स्तर और अभूतपूर्व अपशिष्ट उत्पादन की मात्रा है। उत्तराखंड की राजधानी इसमें अकेली नहीं है। पूरा पहाड़ी राज्य पैदा हो रहे कूड़े के पहाड़ों से जूझ रहा है। अध्ययनों से पता चलता है कि प्रतिदिन 400 से 500 टन ठोस कचरा केवल राजधानी देहरादून में ही उत्पन्न होता है।

स्थानीय निवासी, तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की अस्थायी आबादी इसमें योगदान देती है, लगातार बढ़ रहा यह ठोस कचरा और कचरे की यह चुनौती न केवल खतरनाक है बल्कि हमारी मिट्टी, नदियों और जिस हवा में हम सांस लेते हैं, उस पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। आर्थिक दृष्टि से चूँकि यह हमारे राज्य, जिसे आज भी देवभूमि (देवताओं की भूमि) कहा जाता है, की सुंदरता को धूमिल करता है, दूसरे शब्दों में कहें तो अपशिष्ट प्रबंधन अब कोई ऐसी चीज नहीं रह गयी है जिसे, अनदेखा किया जा सके या फिर टाला जा सके। इसे यहीं और अभी से संभालना होगा।

छावनी परिषदें अपनी स्वच्छता और साफ-सुथरे क्षेत्र के लिए जाने जाते हैं, छावनी परिषद देहरादून ने ठोस कचरे के जिम्मेदारीपूर्वक निपटान पर परियोजनाओं की खोज करके इसे और आगे बढ़ाया है। सैन्य मैदानों की सफाई के उपरांत प्लास्टिक बोतलों, मल्टी लेयर प्लास्टिक पैकेट और अन्य प्लास्टिक के रूप में जो कचरा एकत्रित हुआ, इस कचरे को छावनी प्राधिकारियों ने लैंडफिल को सौंपने के बजाय रिसायकल करने के तरीकों की खोज की जैसे प्लास्टिक थैलियों से प्लास्टिक बोतलें भरने से ईको -ब्रिक बनाई गयी जिसका उपयोग तब पेड़ों के चारो ओर प्लेटफार्म बनाने बेंचे व फूलों की क्यारियों के चारों ओर बाड़ इत्यादि बनाने के लिए किया गया। एक निजी कम्पनी के साथ साझेदारी कर इस प्लास्टिक अपशिष्ट का इस्तेमाल जॉगिंग ट्रैक बनाने में किया गया एवं टाइल्स, पेवर ब्लॉक के साथ और यहां तक कि जॉगिंग ट्रैक के लिए ओवरहेड कवर का भी निर्माण भी इससे किया गया।

इसके अतिरिक्त राजनैतिक नेतृत्व से प्राप्त प्रोत्साहन और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियों से आगे जाने की प्रतिबद्धता के साथ यह कार्यक्रम अपशिष्ट प्रबंधन के स्थायी तरीकों की खोज के रूप में तय किया गया था ताकि हितधारकों के लिए इस क्षेत्र में तकनीकी जानकारी एवं अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके।

प्रौद्योगिकी, चक्रीय अर्थव्यवस्था और अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने के साथ यह शिखर सम्मेलन कंपनियों और संगठनों द्वारा प्राप्त योगदान व प्रदर्शिनियों के के लिए एक उच्चस्तरीय मंच के रूप में स्थापित हुआ।

स्वच्छता चौपाल कार्यक्रम

शुक्रवार, 03 फरवरी, 2023

कार्यक्रम सत्र	विवरण
10.30 AM - 11.30 AM **उद्घाटन**	**मुख्य अतिथि: लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त)** - *माननीय राज्यपाल, उत्तराखण्ड सरकार* **विशिष्ट अतिथि: श्री अजय शर्मा,** *महानिदेशक - रक्षा सम्पदा* → **श्री अभिनव सिंह,** *सीईओ, छावनी परिषद देहरादून:* **स्वागत व संदर्भ संस्थापन** → **स्वच्छता का संदेश (नुक्कड़ नाटक)** → **ब्रिगेडियर अनिर्बान दत्ता: सेना पदक,** *स्टेशन कमांडर और अध्यक्ष छावनी परिषद देहरादून/लंढौर* → **स्वच्छता की पुकार (कैंट बालिका इण्टर कॉलेज की छात्राओं द्वारा स्वच्छता गीत)** → **लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त)** - *माननीय राज्यपाल उत्तराखण्ड सरकार* → **धन्यवाद प्रस्ताव**
12.00 PM - 01.00 PM **प्रथम पैनल चर्चा**	**उत्तराखंड में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन** **संचालक: श्री अनुपम त्रिवेदी,** *उत्तराखंड ब्यूरो हेड, टीवी 18 ब्रॉडकास्ट लिमिटेड* **पहले पैनलिस्ट: ब्रिगेडियर अनिर्बान दत्ता: सेना मेडल,** *स्टेशन कमांडर और अध्यक्ष छावनी परिषद देहरादून/लंढौर* **दूसरे पैनलिस्ट: श्री रोशन रतूड़ी,** *अध्यक्ष, मुनि की रेती नगर पालिका, उत्तराखंड* **तीसरे पैनलिस्ट: श्री नितेश चंद्राकर,** *तकनीकी सलाहकार, GIZ अविरल* → **दर्शकों के प्रश्नोत्तर के लिए 10 मिनट**
02.30 PM- 03.45 PM **दूसरी पैनल चर्चा**	**स्वच्छता प्रोद्योगिकी और विकल्प: अवसर और चुनौतियां** → **स्वच्छता का संदेश (नुक्कड़ नाटक)** → **स्वच्छता की पुकार (कैंट बालिका इण्टर कॉलेज की छात्राओं द्वारा स्वच्छता गीत)** **संचालक: वैद्य शिखा प्रकाश,** *सह-संस्थापक, वैली कल्चर* **पहले पैनलिस्ट: श्री रोहित कुमार,** *निदेशक, एलीफो बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड* **दूसरे पैनलिस्ट: श्री सुमेध भोज,** *निदेशक, स्प्रूस अप इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड* **तीसरे पैनलिस्ट: श्री नितिन श्रीवास्तव,** *सह-संस्थापक और मुख्य विपणन अधिकारी, शायना इको यूनिफाइड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड* → **दर्शकों के प्रश्नोत्तर के लिए 10 मिनट**

शनिवार, 4 फरवरी 2023

कार्यक्रम सत्र	विवरण
10.30 AM - 11.30 AM **चौपाल पर चर्चा**	**स्वच्छता ज्ञान सत्र** **श्री अभिनव सिंह,** *सीईओ, छावनी परिषद देहरादूनः स्वागत और संदर्भ संस्थापन* **श्री अभिषेक राजवंश,** *संयुक्त निदेशक और प्रमुख, सीआईपीईटी उत्तराखंड* **श्री नवनीत पांडे,** *आईएएस, निदेशक, शहरी विकास निदेशालय, उत्तराखंड सरकार* **श्री रवि पाण्डेय,** *अधीक्षण अभियंता, नगरीय विकास निदेशालय, उत्तराखंड* → **दर्शकों के प्रश्नोत्तर के लिए 10 मिनट**
11.30 AM - 12.35 PM **तीसरी पैनल चर्चा**	**स्वच्छता स्टार्टअप्स और इनोवेशन का उभरता हुआ परिदृश्य** → **स्वच्छता का संदेश (नुक्कड़ नाटक)** **संचालक: डॉ. सचिन घई,** *निदेशक, टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर, ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी* **पहले पैनलिस्टः खुशबू सिंह,** *संस्थापक सदस्य, पैड केयर लैब्स* **दूसरे पैनलिस्टः कल्पना पंवार,** *मैनेजर सस्टेनेबिलिटी सॉल्यूशंस, रिसाइकल* **तीसरे पैनलिस्टः श्री अंकित त्रिपाठी,** *संस्थापक, यूनीको - मेक प्लैनेट हैप्पी* → **दर्शकों के प्रश्नोत्तर के लिए 10 मिनट**
01.00 PM - 02.05 PM **चौथी पैनल चर्चा**	**स्वच्छता कार्यकर्ताओं के जीवन पर अंतर्दृष्टि** → **स्वच्छता की पुकार (कैंट बालिका इण्टर कॉलेज की छात्राओं द्वारा स्वच्छता गीत)** **संचालकः श्रीमती प्रेरणा रतूड़ी,** *लीड - रिसर्च एंड डॉक्यूमेंटेशन, एसडीसी फाउंडेशन, उत्तराखंड* **पहले पैनलिस्टः श्री विनोद कुमार,** *सफाई नायक, देहरादून छावनी परिषद* **दूसरे पैनलिस्टः श्रीमती माया देवी,** *सफाई मित्र, देहरादून छावनी परिषद* **तीसरे पैनलिस्टः श्रीमती आरती देवी,** *सफाई मित्र* **चौथे पैनलिस्टः श्री राजेश कुमार,** *सफाई मित्र* → **दर्शकों के प्रश्नोत्तर के लिए 10 मिनट**
03.00 PM - 04.15 PM **विदाई सत्र**	**स्वच्छता कार्यकर्ताओं के जीवन पर अंतर्दृष्टि** **मुख्य अतिथिः श्री प्रेमचंद अग्रवाल,** *माननीय शहरी विकास मंत्री, उत्तराखंड सरकार* **विशिष्ट अतिथिः श्री गणेश जोशी,** *माननीय सैनिक कल्याण, कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री, उत्तराखंड सरकार* **विशिष्ट अतिथिः श्रीमती सविता कपूर,** *माननीय विधान सभा सदस्य, उत्तराखंड सरकार* → **श्री अभिनव सिंह,** *सीईओ छावनी परिषद देहरादूनः* **स्वागत एवं कार्यक्रम सारांश** → **स्वच्छता का संदेश (नुक्कड़ नाटक)** → **ब्रिगेडियर अनिर्बान दत्ताः सेना मेडल,** *स्टेशन कमांडर और अध्यक्ष छावनी परिषद देहरादून/लंढौर* → **श्रीमती सविता कपूर,** *माननीय विधान सभा सदस्य, उत्तराखंड सरकार* → **श्री गणेश जोशी,** *माननीय सैनिक कल्याण, कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री, उत्तराखंड सरकार* → **श्री प्रेमचंद अग्रवाल,** *माननीय शहरी विकास मंत्री, उत्तराखंड सरकार* → **धन्यवाद प्रस्ताव**
4.15 PM के बाद	**चौपाल समापन एवं सामूहिक फोटोग्राफी**

घटनाक्रम

प्रथम दिवस

उद्घाटन सत्र
प्रथम पैनल चर्चा
द्वितीय पैनल चर्चा

उद्घाटन सत्र

मुख्य अतिथि:
लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह
पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त)
माननीय राज्यपाल उत्तराखण्ड सरकार

भारतीय सेना में अपनी सैन्य निपुणता और प्रवीणता के लिए विख्यात लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह, पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (सेवानिवृत्त), रक्षा मामलों के विद्वान हैं। देश की सेवा करते हुए, उन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय वाशिंगटन और राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय ताइपेई, ताइवान में भी इस विषय का अध्ययन किया। भारतीय सेना के एडजुटेंट जनरल के रूप में, उन्होंने मानव संसाधन प्रबंधन पर काम किया है और सूचना प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण, जनशक्ति नीति और योजना, भर्ती, चयन, प्रेरणा, मनोबल, स्वास्थ्य, अनुशासन, कानूनी मुद्दों, कल्याण, पुनर्वास और संबंधित मुद्दों पर एवं पूर्व सैनिकों की समस्याओं पर भी अपनी विभिन्न तैनातियों के दौरान ध्यान केंद्रित किया है।

सेना में उनकी लगभग 40 वर्षों की सेवा के दौरान उन्हें थल सेनाध्यक्ष द्वारा चार राष्ट्रपति पुरस्कारों, दो प्रशस्तियों, परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल और विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित किया गया है। सेना में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने उत्तराखंड के बनबसा में भी सेवाएं दी।

> *साफ-सफाई ईश्वरत्व से बढ़कर है, जब लोगों को कचरा प्रबंधन के बारे में जागरूक करने की बात आती है तो यह चौपाल सही दिशा में उठाया गया एक कदम है। अधिक से अधिक लोग आध्यात्मिकता और मन की शांति के लिए उत्तराखंड आ रहे हैं, इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हम अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में शीर्ष पर हों। मैं उन 51 कंपनियों को भी बधाई देता हूं जो यहां आए हैं और जिन्होंने उत्पाद और प्रौद्योगिकी में अपने कौशल का प्रदर्शन किया है, यह हमें सर्वोत्तम विधि से अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में सहयोग करेगा।*

विशिष्ट अतिथि:
श्री अजय शर्मा
महानिदेशक रक्षा सम्पदा

श्री अजय शर्मा कई छावनी परिषदों के सीईओ रहे हैं और शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) के वित्तीय प्रबंधन और यूएलबी से संबंधित सभी पहलुओं सहित सार्वजनिक नीति प्रबंधन, शहरी नियोजन और परियोजना निष्पादन में विशेषज्ञता रखते हैं। उन्हें सरकारी भूमि प्रबंधन में शीर्ष और क्षेत्र स्तर का ज्ञान भी है।

> *मैं देहरादून कैंट बोर्ड को इस अनूठी पहल के लिए बधाई देता हूं। आप अपशिष्ट प्रबंधन में सभी हितधारकों को एक छत के नीचे लाए हैं। आगे बढ़ते हुए, हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखने और भारत को स्वच्छ और हरित बनाने के लिए काम करेंगे।*

ब्रिगेडियर अनिर्बान दत्ता, सेना पदक
स्टेशन कमांडर और अध्यक्ष,
छावनी परिषद देहरादून और लंढौर

ब्रिगेडियर अनिर्बान दत्ता ने सैन्य और नागरिक आबादी के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई नवीन परियोजनाओं की शुरुआत की है। वर्षा जल संचयन सुनिश्चित करके और सौर वृक्षों की सुविधा प्रदान करके, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की कड़ाई से निगरानी करके, ब्रिगेडियर दत्ता ने संसाधनों के संरक्षण को प्रोत्साहित किया है। उन्होंने प्लास्टिक अपशिष्ट खाद्य पैकेजिंग सामग्री से सभी मौसम में प्रयोग किये जा सकने वाले ट्रैक की संकल्पना कर इसका निर्माण करवाया है, जिससे स्वच्छ भारत अभियान और फिट इंडिया मूवमेंट के मिशन /जनादेश को पूर्ण किया गया है।

> *इस रनिंग ट्रैक बनाने के विचार ने सितंबर 2021 में तब जन्म लिया, जब हमने इस आर्मी ग्राउंड की घास की अतिवृद्धि के कारण सफाई करवाई और हमारे द्वारा एकत्र किए गए प्लास्टिक कचरे के ढेर को पुनर्नवीनीकरण किया गया। रनिंग ट्रैक और इसके ओवरहेड कवर, पेड़ों के चारों ओर के प्लेटफॉर्म सभी इसी पुनर्नवीनीकरण प्लास्टिक से बनाये गये हैं। हमारे प्रयासों के लिए हमें मध्य कमान में बेस्ट ग्रीन मिलिट्री स्टेशन का पुरस्कार मिला है।*

उद्घाटन सत्र में निदेशक, रक्षा सम्पदा, मध्य कमान लखनऊ के डॉ0 डी.एन. यादव भी उपस्थित थे।

श्री अभिनव सिंह
मुख्य अधिशासी अधिकारी
छावनी परिषद देहरादून

नीति आयोग की 'हाथ से मैला ढोने की प्रथा (मैनुअल स्कैवेंजिंग) के उन्मूलन' हेतु राष्ट्रीय नीति के लिए गठित कार्य समूह की पहली बैठक के कार्यवृत्त विवरण को पढ़ने के बाद, मुझे अजंता टेक्नोलॉजीज, बैंगलोर के डॉ. बालकृष्ण के बारे में पता चला। उन्होंने 'सीवर क्रोक' नामक एक मशीन विकसित की थी, जो सीवर साफ करने की समस्या का एक तकनीकी समाधान था, लेकिन उन्होंने उल्लेख किया कि उनकी मशीन को सरकारी निकायों से पर्याप्त प्रतिक्रिया नहीं मिल रही थी। मैंने सोचा कि अगर हम एक ऐसा कार्यक्रम आयोजित कर सकें जहां ऐसे आविष्कारकों और कंपनियों को शहरी स्थानीय निकायों के संबंधित अधिकारियों, जो इन उत्पादों के मुख्य खरीदार हैं, के सामने अपने उत्पादों का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच मिल सके तो यह कंपनियों के लिए एक बाजार उपलब्ध कराने में मददगार होगा। जिसमें हम 'सीवर क्रोक' और उनके अन्य उत्पादों को दिखाने के लिए अजंता टेक्नोलॉजीज के डॉ. बालकृष्ण को भी आमंत्रित कर सकते हैं।

हम उन लोगों को पुरस्कृत भी कर सकते हैं जो हमारे देश में इस क्षेत्र में अभूतपूर्व नई खोज कर रहे हैं। इसके अलावा, ठोस अपशिष्ट के निपटान से जुड़ी कंपनियों द्वारा गैसीकरण, पायरोलिसिस-प्लाज्मा पायरोलिसिस, अपशिष्ट से ऊर्जा संयंत्रों जैसी विभिन्न तकनीकों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी भी आयोजित की जा सकती है। इन कंपनियों को अपनी क्षमताएं दिखाने और विभिन्न स्थानीय निकायों की जरूरतों को समझने का मौका मिलेगा।

हमने इस कार्यक्रम को 2 दिवसीय संगोष्ठी-सह-प्रदर्शनी के रूप में प्रस्तावित किया जिसमें प्रदर्शनियों के अलावा, सम्बंधित क्षेत्रों से विशेषज्ञों को शामिल करके ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर विभिन्न विषयों पर पैनल चर्चा आयोजित की जाएगी। इसके अलावा, पहाड़ी ढलानों से कूड़ा उठाने के लिए एक मशीन डिजाइन करने के लिए 'माउंटेन स्वच्छता टेक्नोलॉजी चैलेंज' का प्रमोचन किया गया।

इस आयोजन के लिए हमने शहरी विकास निदेशालय, उत्तराखंड सरकार के साथ मिलकर कार्य किया और छावनी परिषदों के मुख्य अधिशासी अधिकारियों के अलावा, विभिन्न नगर पालिकाओं और नगर निगमों के नगर आयुक्तों/कार्यकारी अधिकारियों/महापौरों को भी आमंत्रित किया गया। हमने उत्तराखंड सरकार के पंचायती राज मंत्रालय को भी निमंत्रण दिया क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का मुद्दा भी जोर पकड़ रहा है। इसमें जिला पंचायत/ग्राम पंचायत के सदस्यों को भी आमंत्रित किया गया। आयोजन का उद्देश्य राज्य के सभी नगर निकायों को लाभ पहुंचाना था और इस रिपोर्ट का उद्देश्य देश भर के सभी नगर निकायों को लाभ पहुंचाना है।

इस आयोजन के कई लाभ हैं जैसे बाजार में उपलब्ध उत्पादों के बारे में अधिकारियों के कौशल और ज्ञान को बढ़ाना, देश भर में नवीन उत्पादों और प्रचलन को पहचानना और इस क्षेत्र में काम करने वाली निजी क्षेत्र की कंपनियों को साथ में लाना आदि।

पहली पैनल चर्चा

उत्तराखण्ड में अपशिष्ट प्रबंधन

पैनलिस्ट 1

ब्रिगेडियर अर्निबान दत्ता
सेना पदक
स्टेशन कमांडर और अध्यक्ष,
छावनी परिषद,
देहरादून और लंढोर

पैनलिस्ट 2

श्री रोशन रतूड़ी
अध्यक्ष,
मुनि की रेती नगरपालिका,
उत्तराखण्ड

पैनलिस्ट 3

श्री नितेश चंद्राकर
तकनीकी सलाहकार,
जीआईजेड प्रोजेक्ट अविरल

संचालक

श्री अनुपम त्रिवेदी
ब्यूरो हेड, उत्तराखंड
टीवी 18 ब्रॉडकास्ट लिमिटेड

पैनलिस्ट
ब्रिगेडियर अर्निबान दत्ता - सेना पदक, *स्टेशन कमांडर और अध्यक्ष, छावनी परिषद, देहरादून व लंढौर*

पैनलिस्ट
श्री रोशन रतूड़ी, *अध्यक्ष, मुनि की रेती नगरपालिका, उत्तराखण्ड*

मुनि की रेती नगर पालिका उत्तराखंड के अध्यक्ष, श्री रोशन रतूड़ी ने छात्र जीवन से ही सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में कार्य किया है। इसकी शुरुआत युवा रक्तदान समूह के गठन से हुई। उन्हें 2003 में ग्राम पंचायत सदस्य के रूप में चुना गया था और 2008 में वे उत्तराखंड की पांचवीं सबसे बड़ी ग्राम पंचायत ढालवाला के पहले साक्षर प्रधान बने। उत्तराखण्ड की यह पहली ग्राम पंचायत थी जहाँ सफाई कर्मचारी कार्यरत थे, स्ट्रीट लाइटें लगायी गयी थी, जन सहयोग से लाइटों की मरम्मत एवं बिजली बिलों के भुगतान की व्यवस्था की गयी थी। 2018 में रतूड़ी को मुनि की रेती, ढालवाला नगर पालिका का नगर अध्यक्ष चुना गया।

पैनलिस्ट
श्री नितेश चंद्राकर - *तकनीकी सलाहकार, जीआईजेड प्रोजेक्ट अविरल*

प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, जी आई जेड प्रोजेक्ट अविरल, पर्यावरण नीति और संसाधन दक्षता सलाहकार श्री नीतेश चंद्राकर ने ठोस और प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन और चक्रीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर काम किया है। शहरी नियोजन में स्नातकोत्तर के साथ एक सिविल इंजीनियर, चंद्राकर ने यूएनडीपी, फिनीश सोसाइटी, आगा खान डेवलपमेंट नेटवर्क जैसे संगठनों के साथ काम किया है और टीमों की योजना बनाने और अपशिष्ट प्रबंधन परियोजनाओं को लागू करने में मदद की है, जिन्हें यूरोपीय संघ, नीदरलैंड सरकार, सीएसआर, एनएमसीजी, और अन्य द्वारा वित्त पोषित किया गया था।

संचालक

श्री अनुपम त्रिवेदी, *उत्तराखंड ब्यूरो हेड, टीवी 18 ब्रॉडकास्ट लिमिटेड*

विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को संभालने में दो दशकों से अधिक के अनुभव के साथ एक द्विभाषी मल्टीमीडिया पत्रकार, अनुपम त्रिवेदी को उत्तर भारत की सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता की गहरी समझ है, और वे नए मीडिया और डिजिटल समाचार संचालन के समान रूप से जानकार हैं। वे एक नेतृत्वकर्ता की भूमिका में हैं और TV18 ब्रॉडकास्ट लिमिटेड के टीवी और डिजिटल वर्टिकल के लिए उत्तराखंड राज्य ब्यूरो (उत्तर भारत) के प्रमुख हैं। परामर्शदाता की भूमिका इनके कार्य का एक हिस्सा है जिसका वह समान रूप से आनंद लेते है।

महत्वपूर्ण प्रश्नावली

1. *उत्तराखंड में स्वच्छता के स्तर में सुधार के लिए सशस्त्र बलों के लिए काम करने और जीने के सशस्त्र बलों के तरीके से असैनिक नागरिक जीवन के लिए क्या सीख संभव है?*
2. *मुनि की रेती स्वच्छ सर्वेक्षण में हमेशा से एक अव्वल प्रर्दशक रही है। इस सफलता का कारण क्या है?*
3. *प्रोजेक्ट अविरल के संदर्भ में, परियोजनाओं को उनकी समाप्ति अवधि के बाद टिकाऊ कैसे बनाया जा सकता है?*
4. *जब बात सिर्फ कचरा प्रबंधन की ही नहीं बल्कि कचरा पैदा करने की आती है तो उत्तराखंड के लोगों को बदलाव लाने के लिए कैसे संगठित किया जा सकता है?*

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

ब्रिगेडियर अनिर्बान दत्ता: *"सूचना, शिक्षा और संचार का प्रसार न केवल अपशिष्ट प्रबंधन बल्कि अपशिष्ट उत्पादन के लिए भी महत्वपूर्ण है। छावनी में ठोस कचरा प्रबंधन की दिशा में अपने प्रयासों को पूरा करना हमारे लिए थोड़ा आसान है क्योंकि यह एक सैन्य क्षेत्र है और हम अनुचित कामों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई कर सकते हैं। यह कहने के बाद, यह भी सच है कि बदलाव लाने के लिए केवल इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। एक बार जब आप जान जाते हैं कि क्या करना है, तो यह बचता है कि कैसे करना है।"*

श्री रोशन रतूड़ी: *"मुनि की रेती की दैनिक आधार पर 1 लाख से 2.5 लाख के बीच अस्थायी आबादी है। परिणामतः इस्तेमाल किए गए चिप्स के पैकेट, बोतलें, गिलास और प्लास्टिक के कई अन्य रूप में ढेर, हम सभी कचरे को इकट्ठा करने और स्रोत पर ही अलग करने के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हम जनता को कम प्लास्टिक उत्पादों के उपयोग के बारे में भी जागरूक कर रहे हैं। मैं अपने क्षेत्र में जो कुछ भी सीख कर लागू कर सकता हूं, उसके लिए अपनी आंखें और कान खुले रखता हूं। कुछ भी नया सीखने की भूख हमेशा बनी रहनी चाहिए। हमारी सबसे बड़ी सफलता की कहानियों में से एक यह है कि कैसे हमने सड़कों के नीचे रिसाव गड्ढे या अवशोषण गर्त बनाए हैं, जिससे न केवल सड़कों की बाढ़ को नियंत्रित किया है बल्कि भूजल स्तर में भी सुधार हुआ है। जैसा मैंने कहा, जहां चाह है, वहां राह है।"*

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

श्री नितेश चंद्राकर: *"हमारा मकसद प्लास्टिक कचरे को गंगा नदी में जाने से रोकना है। इसके लिए हमें उन शहरों के लोगों के साथ मिलकर काम करना होगा, जहां नदी बहती है। उचित अनुसंधान और आधारभूत सर्वेक्षणों के बाद एक कार्यशील मॉडल बनाया गया है, और इसमें अपशिष्ट संग्रह, पृथक्करण और प्रसंस्करण शामिल है। हमें प्लास्टिक प्रतिबंध पर फिर से विचार करना होगा और इसे और प्रासंगिक बनाना होगा। जब अपशिष्ट पृथक्करण की बात आती है, तो मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि यह हमारे पक्ष में काम कर रहा है। मेरी सीख यह है कि इसमें समय लगेगा और हमें इस पर जनता के साथ धैर्यपूर्वक काम करने की जरूरत है।"*

आगे की राह

1. *अपशिष्ट प्रबंधन में कोई भी पहल तभी सफल होगी जब पूरा समुदाय उस पर अमल करें और उसकी सफलता में योगदान दे।*
2. *सूचना, जागरूकता और संचार अपशिष्ट प्रबंधन परियोजनाओं की सफलता की कुंजी है।*
3. *अपशिष्ट प्रबंधन मॉडल तैयार करने वालों को इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि क्या काम करेगा, क्या नहीं और कितना समय लगेगा। लगातार सीखना, भूलना और फिर से सीखना महत्वपूर्ण है।*

दूसरी पैनल चर्चा

स्वच्छता प्रौद्योगिकियां और विकल्प: अवसर और चुनौतियां

पैनलिस्ट 1

श्री रोहित कुमार
निदेशक, एलीफो बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड

पैनलिस्ट 2

श्री सुमेध भोज
निदेशक,
स्प्रूस अप इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड

पैनलिस्ट 3

श्री नितिन श्रीवास्तव
सह-संस्थापक और
मुख्य विपणन अधिकारी,
शायना इको यूनिफाइड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड

संचालक

वैद्य शिखा प्रकाश
सह-संस्थापक,
वैली कल्चर लिमिटेड

पैनलिस्ट

श्री रोहित कुमार, *निदेशक, एलेफो बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड*

विमानन, विनिर्माण, नवीकरणीय और गैर-नवीकरणीय ऊर्जा और अपशिष्ट जल क्षेत्रों में दो दशकों से अधिक के अनुभव के साथ, रोहित कुमार वर्तमान में एलेफो बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक के रूप में काम कर रहे हैं। एलेफो कंपनी जिसकी उन्होंने स्थापना की थी, मुख्य रूप से अपशिष्ट जल उपचार क्षेत्र में काम करता है और इसका भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, ड्यूक विश्वविद्यालय, दक्षिण फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के साथ समन्वय है, और यह भारत में बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन व डीआरडीओ के साथ, एक वाणिज्यिक भागीदार भी है। एलेफो दूसरी पीढ़ी के बायो-डाइजेस्टर के संयुक्त विकास में शामिल है। केमिकल इंजीनियर, कुमार के पास भारतीय प्रबंधन संस्थान, इंदौर से स्नातकोत्तर डिप्लोमा है।

पैनलिस्ट

श्री सुमेध भोज, *निदेशक, स्प्रूस अप इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड*

भारत की विकास गाथा के लिए प्रतिबद्ध, स्प्रूस अप के सह-संस्थापक और मुख्य राजस्व अधिकारी (सीआरओ) सुमेध भोज के पास कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ काम करने का समृद्ध अनुभव है। उनके काम ने उन्हें आयुक्त दक्षिण दिल्ली कार्यालय, आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, प्रधान मंत्री कार्यालय (पीएमओ) और सरकारी ई-माक्रेट क्षेत्र (जेम) के विभिन्न अधिकारियों के साथ मिलकर अपशिष्ट संग्रह हेतु वैक्यूम आधारित नई श्रेणी बनाने के लिए काम किया। भोज के पास अंतरराष्ट्रीय व्यापार में स्नातक की डिग्री है और एस.पी. जैन स्कूल ऑफ ग्लोबल मैनेजमेंट, सिंगापुर से व्यवसाय प्रबंधन में स्नातकोत्तर की उपाधि है।

पैनलिस्ट

श्री नितिन श्रीवास्तव, *सह-संस्थापक और मुख्य विपणन अधिकारी, शायना इको यूनिफाइड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड*

नितिन श्रीवास्तव शायना इकोयूनिफाइड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सह-संस्थापक और मुख्य विपणन अधिकारी हैं, और उन्होंने प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में पिछले छह वर्षों से बड़े पैमाने पर काम किया है। परिणामतः आधारभूत अवसंरचना के विकास के लिए 16,00,000 किलोग्राम प्लास्टिक कचरे को उत्पादों में परिवर्तित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कानून की डिग्री धारित श्रीवास्तव अपशिष्ट भराव क्षेत्रों व जल निकायों में शून्य प्लास्टिक की अवधारणा में दृढ़ विश्वास रखते हैं। शायना से पहले, उन्होंने प्रमुख उपभोक्ता ब्रांडों के लिए बाजार विपणन के क्षेत्र में काम किया है और प्रबंधन में इनके पास स्नातकोत्तर उपाधि है।

संचालक

वैद्य श्रीमती शिखा प्रकाश, *सह-संस्थापक, वैली कल्चर लिमिटेड*

तीसरी पीढ़ी के आयुर्वेदिक चिकित्सक और उत्तराखंड में एक उद्यमी, शिखा प्रकाश ने विभिन्न प्रतिष्ठित अस्पतालों के साथ एक आयुर्वेदिक सलाहकार के रूप में काम किया है और पड़ाव स्पेशलिटी आयुर्वेदिक उपचार केंद्र में एक निदेशक और वरिष्ठ आयुर्वेदिक सलाहकार हैं। उन्होंने 2019 में वैली कल्चर इंडिया की सह-स्थापना की, ताकि स्थानीय किसानों से सीधे हिमालयी खाद्य पदार्थ प्राप्त किया जा सके। वैली कल्चर उत्तराखंड की पहाड़ियों से 5000 महिला किसानों के साथ काम करता है और उनकी आजीविका हेतु उनका समर्थन करता है। उन्होंने उत्तराखंड के पूर्व राज्यपाल के स्वास्थ्य सलाहकार के रूप में विभिन्न परियोजनाओं पर काम किया है। वे स्टार्टअप फ्लो उत्तराखंड की समन्वयक भी हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्नावली

1. *पिछले तीन से पांच सालों में अपशिष्ट प्रबंधन प्रौद्योगिकी का स्थान किस प्रकार बदल गया है ?*
2. *कुछ तकनीकी हथियार - एआई, रोबोट, आई ओ टी आदि क्या हैं, जो वादा करते हैं अपशिष्ट प्रबंधन की पीड़ा को कम करने का ?*
3. *इस क्षेत्र में आपको किन रूकावटों का सामना करना पडता है?*

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

श्री रोहित कुमार : *"अपशिष्ट संग्रह अपशिष्ट प्रबंधन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। और मुझे लगता है कि शहरी जनता के एक बड़े हिस्से के बीच इस कचरे को कैसे सौंपना चाहिए, इसके महत्व के बारे में काफी जागरूकता है। यह भी है कि पानी में अपशिष्ट की पहचान करने के मामले में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण भी इस पर अपना काम कर रहा है और शासी निकायों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि एनजीटी के मानदंडों को लागू किया जाए। यह भी समझ लेना चाहिए कि पानी का उपचार करने और बीओडी' को 10 से 30 के बीच लाने की तकनीक महंगी होने वाली है और जब तक इन मानदंडों का पालन न करने वालों को दंडित नहीं किया जाता है, तब तक हमारे सामने समस्याएं और बाधाएं बनी रहेंगी।"*

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

बीओडी, या जैव-रासायनिक ऑक्सीजन की मांग की गणना नमूने में जीवों की संख्या के आधार पर की जाती है, जिसे उनकी चयापचय दर से गुणा किया जाता है। बीओडी जितना कम होगा, पीने के लिए पानी उतना ही सुरक्षित होगा।

श्री सुमेध भोज : *"अपशिष्ट प्रबंधन में तकनीकी हस्तक्षेप महत्वपूर्ण है। यह हमारे सफाई कर्मचारियों को एक सुरक्षित, स्वस्थ और कम जोखिम भरा कार्य करने के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य को गरिमा प्रदान करता है। साथ ही उनकी उत्पादकता कई गुना बढ़ जाती है। ऐसा कहने के बाद, यह भी सच है कि जब तकनीक को अपनाने की बात आती है तो शासी निकायों के बीच काफी निष्क्रियता मौजूद होती है। और जैसा कि रोहित ने कहा, समस्या नीति निर्माण के स्तर पर नहीं है बल्कि इन नीतियों को लागू करने में है।*

कचरे को घृणा की दृष्टि से देखने की आवश्यकता नहीं है, मैं गर्व से खुद को कचरावाला कहता हूं। जबकि जागरूकता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी अपशिष्ट प्रबंधन की कुंजी है, मुझे यह भी लगता है कि कूड़ा फैलाने और अपने घरेलू कचरे का प्रबंधन न करना एक सामाजिक कलंक माना जाना चाहिए क्योंकि ऐसा कैसे हो सकता है कि वही व्यक्ति जो भारत में चलती कार से बोतल फेंकता है, पश्चिमी देश में कचरा निस्तारण के नियमों का पालन करता है?"

श्री नितिन श्रीवास्तव: *"जब तक कचरे को अलग नहीं किया जाता है, तब तक इसका कोई उपयोग नहीं होता है। इसका न तो पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है और न ही इसका पुनः उपयोग किया जा सकता है। सामुदायिक स्तर पर, हम जिस तरह से कचरे को संभालते हैं और उसका उपचार करते हैं वह बहुत अजीब है। एक मिनट में हम एक पैकेट से चिप्स खा रहे हैं और अगले मिनट, हम इसे कूड़े के रूप में फेंक देते हैं और इससे हमारा कोई लेना-देना नहीं होता, मैं कहता हूं कि इसे कूड़े के रूप में देखना बंद करो, बल्कि इसे पुर्नचक्रण और पुर्नप्रयोग करने के अवसर के रूप में देखो। इसके अतिरिक्त, उद्यमों को उन उत्पादों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए जो पुनर्नवीनीकृत कचरे से बने होते हैं और ताजा प्लास्टिक के उपयोग को बढ़ावा कम दिया जाना चाहिए।*

जब अपशिष्ट प्रबंधन में तकनीक के भविष्य की बात आती है, तो मैं कहूंगा कि चीजें आगे बढ़ रही हैं। पहली दुनिया के कुछ देशों ने एआई को लागू करना शुरू कर दिया है। स्मार्ट कूड़ेदान का उपयोग किया जा रहा है और एक बार जब कचरा एक चिह्नित स्तर तक पहुंच जाता है, तो इसे प्रबंधित करने के लिए केवल एक अधिसूचना के माध्यम से कूड़ा गाड़ियों से सम्पर्क किया जाता है। रोबोट की मदद से मेडिकल अपशिष्ट और खतरनाक कचरे का प्रबंधन किया जा रहा है।"

आगे की राह

1. *अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में काम कर रहे नगरीय निकायों और संगठनों को स्वच्छता कर्मचारियों की बेहतर कार्य स्थितियों के साथ-साथ उत्पादकता में वृद्धि के लिए क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक खुले विचारों वाला होना चाहिए।*
2. *राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) के मानदंडों को और अधिक सख्ती से लागू किया जाना चाहिए और उन मापदंडों तक पहुंचने में मदद करने वाली तकनीक को अपनाया जाना चाहिए, भले ही यह वर्तमान में अधिक महंगा हो।*
3. *अब समय आ गया है कि कचरे को एक संसाधन के रूप में देखा जाए, न कि कचरे के रूप में।*

घटनाक्रम

द्वितीय दिवस

स्वच्छता ज्ञान सत्र
तीसरी पैनल चर्चा
चौथी पैनल चर्चा
विदाई सत्र

स्वच्छता ज्ञान सत्र

श्री अभिनव सिंह
मुख्य अधिशासी अधिकारी
छावनी परिषद देहरादून

श्री अभिनव सिंह भारतीय रक्षा सम्पदा सेवा (आईडीईएस) के 2015 बैच के अधिकारी हैं, वर्तमान में वह छावनी परिषद देहरादून के साथ-साथ मसूरी में स्थित लंढौर कैंट के भी मुख्य अधिशासी अधिकारी हैं। वह पहले जोधपुर में और उससे पहले अयोध्या छावनी बोर्ड में तैनात थे। श्री सिंह हरिद्वार के रहने वाले हैं और उन्होंने पंतनगर विश्वविद्यालय से बीटेक और आईआईएम, मुंबई से पोस्ट-ग्रेजुएट कोर्स किया है।

हमें ऐसी निजी कंपनियों की आवश्यकता है जो अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौती पर काबू पाने में सरकारी संगठनों जितनी बड़ी भूमिका निभाएं। चक्रीय अर्थव्यवस्था के प्रभावी कार्यान्वयन और कचरा प्रबंधन को एक साथ लाने से अत्यधिक सकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। मैं पैडकेयर और शायना जैसी कंपनियों को बधाई देता हूं, जो आज चौपाल में अपनी तकनीक का प्रदर्शन कर रहे हैं। शायना कम्पनी पुनर्नवीनीकरण प्लास्टिक से संरचनात्मक टाइलें और फुटपाथ ब्लॉक बनाने के क्षेत्र में दुनिया के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। जबकि दूसरी कम्पनी पैडकेयर ने उपयोग किए गए सैनिटरी नैपकिन को पुर्नचक्रण करने की तकनीक का प्रमोचन कराया है। हमें कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में असीमित संभावनाओं का पता लगाने के लिए ऐसी कंपनियों और अन्य को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

श्री अभिषेक राजवंश
संयुक्त निदेशक एवं प्रमुख,
सीआईपीईटी उत्तराखंड

अभिषेक राजवंश सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोकेमिकल्स इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (सीआईपीईटी) कौशल और तकनीकी सहायता केंद्र, देहरादून में संयुक्त निदेशक और प्रमुख हैं। देहरादून केंद्र से संबद्ध होने से पहले उन्होंने सीआईपीईटी के पानीपत और भोपाल केंद्र में काम किया है। उन्हें प्रसंस्करण और परीक्षण के क्षेत्र में सीआईपीईटी में काम करने का 14 साल का अनुभव है। योग्यता से एक इंजीनियर, राजवंश के पास सीआईपीईटी से प्लास्टिक इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भी है।

प्लास्टिक के इतने अच्छे उपयोग हैं लेकिन उसी के गलत व्यवहार के कारण हमने इस वरदान को अभिशाप में बदल दिया है याद रखिए, प्लास्टिक, पीपीई किट और मास्क ही थे जिन्होंने हमें कोरोना वायरस से बचाया। आज के परिदृश्य में, यह एकल प्रयोग प्लास्टिक है जिसका हमें समाधान करना चाहिए और इसे दूर करना सीखना चाहिए। अपशिष्ट पृथक्करण एक बड़ी समस्या है, अगर हम सभी सात प्रकार के प्लास्टिक को अलग-अलग कर सकें और उन्हें पुर्नचक्रित करना जान सकें तो हम इस चुनौती से पार पा सकते हैं। इस देश के नागरिक के रूप में, मुझे लगता है कि हमें गंदगी करना बंद करना चाहिए और अपने कार्यों की जिम्मेदारी समझनी चाहिए न कि केवल सरकारों को दोष देना चाहिए।

श्री नवनीत पांडे
आईएएस, निदेशक, शहरी विकास निदेशालय, उत्तराखंड सरकार

वर्तमान में उत्तराखण्ड सरकार में निदेशक एवं अपर सचिव, शहरी विकास उत्तराखण्ड के पद पर कार्यरत, श्री नवनीत पांडे भारतीय प्रशासनिक सेवा के 2015 बैच के अधिकारी हैं। उनके पास उत्तराखंड के माननीय मुख्यमंत्री के अतिरिक्त सचिव का पद भी है।

> *यह चौपाल एक ऐसी अनूठी पहल है जहां हमारे पास "कूड़े की नुमाइश" है। कचरे को लेकर बर्बादी की जो धारणा है उसे लेकर बदलाव की दिशा में यह एक बुनियादी कदम है। हमें इस धारणा को भी बदलने की आवश्यकता है कि आप मेरे घर के आस पास की जगह को छोड़कर कहीं भी कूड़ा फेंक सकते हैं। जब अपशिष्ट क्षेपण के लिए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में दिशानिर्देशों की बात आती है, तो मुझे लगता है कि लोगों को जागरूक करने के लिए और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है कि ये क्षेपण स्थल बहुत आधुनिक हैं और बदबू तथा बीमारियों से मुक्त हैं। शहरी स्थानीय निकायों को यहां नेतृत्वकर्ता की भूमिका में आना होगा और इस दिशा में बड़े पैमाने पर काम करना होगा। मैं मानता हूं कि पुराना पड़ा कूड़ा एक चुनौती है और लैंडफिल (कचरा भराव क्षेत्र) स्वास्थ्य के लिए खतरा हो सकते हैं इसलिए यह बहुत स्वागत योग्य नहीं है। लेकिन आज बनाये गये अपशिष्ट संयंत्र अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करते है।*

श्री रवि पाण्डेय
अधीक्षण अभियंता, नगरीय विकास निदेशालय, उत्तराखण्ड

श्री रवि पाण्डेय वर्तमान में अधीक्षण अभियंता/नोडल अधिकारी अमृत 2.0 और एसबीएम 2.0/एसडब्ल्यूएम, यूडीडी, उत्तराखंड के रूप में कार्यरत हैं। उनके पास चियांगमाई (थाईलैंड) अर्बन एग्रीकल्चर इंटरफेस, सिंगापुर, मलेशिया और थाईलैंड में विभिन्न शहरी विकास विषयों, फिलीपींस में सेप्टेज से संबंधित कम लागत वाली स्वच्छता और जर्मनी से प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन में व्यापक अंतरराष्ट्रीय अनुभव है।

> *तथ्य यह है कि हम एक घनी आबादी वाले विकासशील देश हैं, जब बात चक्रीयता और अपशिष्ट प्रबंधन में प्रौद्योगिकी के उपयोग की आती है तो हमें युद्धस्तर पर काम करने की आवश्यकता है। इसके अलावा हमें सफल होने के लिए सभी की भागीदारी की आवश्यकता है, यही पृथक्करण सफल अपशिष्ट प्रबंधन का सूत्र है और हमें इस स्थान पर काम करने वालों को पर्याप्त भुगतान करने की आवश्यकता है और इसे लाभप्रद बनाने की जरूरत है।*

आगे की राह

1. *अपशिष्ट पृथक्करण स्वच्छता का सूत्र है।*
2. *अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र अब स्वास्थ्य के लिए पहले की तरह खतरनाक नहीं रह गए हैं अगर उन्हें अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार बनाया जाता है।*
3. *हमें कचरे को एक समस्या के रूप में नहीं बल्कि एक संसाधन के रूप में देखना शुरू करना होगा।*

तीसरी पैनल चर्चा

स्वच्छता स्टार्टअप और नवाचारों का उभरता परिदृश्य

पैनलिस्ट 1

खुशबू सिंह
संस्थापक सदस्य,
पैडकेयर लैब्स

पैनलिस्ट 2

कल्पना पंवार
प्रबंधक,
सस्टेनेबिलिटी सॉल्यूशंस,
रिसायकल

पैनलिस्ट 3

श्री अंकित त्रिपाठी
संस्थापक,
यूनेको

संचालक

डॉ0 सचिन घई
निदेशक, टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर, ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय

पैनलिस्ट

खुशबू सिंह, *संस्थापक सदस्य, पैड केयर लैब्स*

खुशबू सिंह 2015 से मासिक धर्म स्वच्छता जैसे विषय पर काम कर रही हैं। इस अवधि में, उन्होंने कई निगमों, स्कूलों और कार्यस्थलों में सुरक्षित और स्वच्छ मासिक धर्म हेतु स्थान उपलब्ध कराने की वकालत और सुविधा प्रदान करवाई। इसी क्रम में इनके प्रबंधन में दिल्ली-एनसीआर के स्कूलों और कॉलेजों के साथ-साथ मानेसर और सोनीपत के ग्रामीण इलाकों में बुनियादी मासिक धर्म स्वच्छता के लिए प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किए गए हैं। पैडकेयर में खुशबू मासिक धर्म स्वच्छता और प्लास्टिक से पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए स्थायी समाधानों पर जोर दे रही हैं।

पैनलिस्ट

कल्पना पंवार - *प्रबंधक, सस्टेनेबिलिटी सॉल्यूशंस, रिसायकल*

कल्पना पंवार संधारणीयता और सरकारी विभागों से सम्बंधों के मामलों में रिसायकल कम्पनी की प्रबंधक हैं। रिसायकल एक चक्रीय बाजार अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी तंत्र में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए सॉफ्टवेयर समाधान प्रदान करती हैं। सरकार के साथ कई क्षेत्रों में एक दशक के अनुभव के साथ नीति विकास सलाहकार रही पंवार ने भारत सरकार के मंत्रालयों और कई राज्य सरकारों के साथ नीति सलाहकार के रूप में भी काम किया है। वर्तमान में वह भारत में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए एक मजबूत पारिस्थिति की तंत्र को सक्षम करने के लिए सरकारी नीति को आगे बढ़ाने की दिशा में काम कर रही हैं।

पैनलिस्ट

श्री अंकित त्रिपाठी - *संस्थापक, यूनेको*

अपने भाई के साथ, अंकित त्रिपाठी ने यूनेको की शुरुआत की, जो अपशिष्ट और पृथ्वी के अनुकूल सामग्रियों से शून्य-अपशिष्ट, की धारणा के साथ टिकाऊ उत्पाद बनाता है। पर्यावरण के लिए कुछ करने की ललक तब पैदा हुई जब उनके घर के पास एक अपशिष्ट भराव क्षेत्र (लैंडफिल) ने उन्हें अपशिष्ट प्रबंधन के महत्व का एहसास कराया। मैकेनिकल इंजीनियर त्रिपाठी को ऑडी एनवायर्नमेंटल फाउंडेशन द्वारा दुनिया भर के शीर्ष 15 नवप्रर्वतक में चुना गया था, और दुबई एक्सपो 2021 में यूनेको का प्रतिनिधित्व करने के लिए भारत भर के शीर्ष 15 स्टार्टअप में भी इन्होने जगह बनाई। इन्हें आजतक चैनल पर भारत के पहले रियलिटी फंडिंग शो हॉर्सेस स्टेबल में भी दिखाया गया।

संचालक

डॉ0 सचिन घई - *निदेशक, टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर, ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय*

डॉ. सचिन घई ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय में टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर के निदेशक हैं। दो दशकों से अधिक के अनुभव के साथ एक शिक्षाविद, प्रशिक्षक, स्टार्ट-अप सलाहकार, और एक व्यवसायिक लाइफ कोच हैं। उनकी रुचि के क्षेत्रों में अर्थशास्त्र प्रबंधन, रणनीति, संगठनात्मक व्यवहार, नेतृत्व, नवाचार, संचार, व्यावहारिक-कौशल और व्यक्तित्व विकास शामिल हैं। घई ने कई स्टार्टअप्स को परामर्श दिया और महत्वाकांक्षी उद्यमियों और उभरते अन्वेषकों को अपने उद्यम विकसित करने और उन्हें आगे बढ़ाने में सक्षम बनाया है। उन्होंने शहरी विकास और प्रबंधन, नगरीय गतिकी और सामाजिकी, आर्थिक, पर्यावरणीय प्रभाव आकलन और शहरों के समावेशी और सतत् विकास प्रबंधन के क्षेत्र में अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है।

महत्वपूर्ण प्रश्नावली

1. *क्या है जो स्वच्छता प्रबंधन क्षेत्र में स्टार्टअप को इतना रोमांचक बनाता है? इसके विपरीत, क्या चीज उन्हें दूर रख सकती है?*
2. *इस क्षेत्र में आप क्या सीमाएँ देखते हैं?*
3. *आप नीति-निर्धारण स्तर पर सरकार से किस प्रकार का समर्थन चाहेंगे?*

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

खुशबू सिंह : *"यह सोचना कि मैंने जो पहला सैनिटरी नैपकिन इस्तेमाल किया था, वह अभी भी वहीं कहीं होगा, एक डरावना विचार है, लेकिन यह सच है। पैडकेयर ऐसे सैनिटरी कचरे के लिए एक समाधान है जिसमें हम प्लास्टिक से सेलूलोज को अलग करते हैं। प्लास्टिक को प्लास्टिक पुर्नचक्रण कर्ता के पास भेजा जाता है, जबकि सेलूलोज का उपयोग कागज बनाने के लिए किया जाता है। पैडकेयर जैसे ही हमें अन्य उद्यमों की वास्तव में आवश्यकता है। हमें अपशिष्ट प्रबंधन उद्योग में युवाओं के योगदान की आवश्यकता है, उनके पास समस्याओं को देखने और समाधान निकालने का एक अनोखा तरीका है।"*

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

कल्पना पंवार : *"रिसाइकल के प्लास्टिक जमा धन वापसी प्रणाली ने सटीक रूप से सिंगल यूज प्लास्टिक की बोतलें और प्लास्टिक कचरे को आकर्षक बना दिया है। पवित्र केदारनाथ मंदिर में लाखों तीर्थयात्रियों के आने से पहाड़ियों पर बेहिसाब मात्रा में कचरा फैला हुआ है। पानी की बोतलों पर क्यूआर कोड लगाने और उन्हें 10 रुपये अधिक में बेचने का मतलब है कि बोतल वापस करने वाले को किसी भी संग्रह केंद्र पर बोतल जमा करने पर 10 रुपये वापस मिलेंगे। यदि तीर्थयात्री ने ऐसा नहीं किया, तो ऐसा करने वाले किसी अन्य व्यक्ति को पैसा मिल गया। इस प्रकार बेकार बोतलें से पैसे में बदल गईं। इस तरीके ने वास्तव में अच्छा काम किया है, हम अन्य सिंगल यूज प्लास्टिक वस्तुओं पर भी इसी रणनीति का उपयोग करने के तरीके तलाश रहे हैं।"*

श्री अंकित त्रिपाठी : *"मेरे माता-पिता को यह समझाना आसान नहीं था कि मैं अपशिष्ट पदार्थों के साथ काम करना चाहता हूं और टिकाऊ पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद बनाना चाहता हूं। उन्होंने केवल "कचरे के साथ काम करना" शब्दों पर ध्यान केंद्रित किया। मेरे भाई और मैंने कॉलेज जाने के दौरान महानगरों में अपने उत्पाद बेचे और अब हम पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों के क्षेत्र में लहर पैदा कर रहे हैं, इन उत्पादों में टूथब्रश, हैंडबैग और स्टेशनरी से लेकर बांस के स्पीकर हैं।"*

आगे की राह

1. *युवाओं को अपशिष्ट प्रबंधन और इसकी व्यापकता में स्टार्टअप क्षेत्र का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।*
2. *उद्भवन केन्द्रों और सरकारी मदद से न केवल परियोजनाओं को वित्तपोषित करने बल्कि उन्हें आगे बढ़ाने में भी काफी मदद मिलेगी।*
3. *अपशिष्ट प्रबंधन में स्टार्टअप को अपनी प्रतिभा, उत्पाद और प्रौद्योगिकी प्रदर्शित करने के लिए अधिक से अधिक मंचों की आवश्यकता है।*

चौथी पैनल चर्चा

स्वच्छता कार्यकर्ताओं के जीवन पर अंतर्दृष्टि

पैनलिस्ट 1
श्री विनोद कुमार
सफाई नायक,
देहरादून छावनी

पैनलिस्ट 2
श्रीमती माया प्रेम किशन
सफाई कर्मचारी,
देहरादून छावनी

पैनलिस्ट 3
श्री राकेश कुमार
सीवर वर्कर
(स्वच्छता मित्र)

पैनलिस्ट 4
श्रीमती आरती
कूड़ा बीनने वाली
(स्वच्छता मित्र)

संचालक
श्रीमती प्रेरणा रतूड़ी
लीड-रिसर्च एंड डॉक्यूमेंटेशन,
एसडीसी फाउंडेशन,
उत्तराखंड

पैनलिस्ट
श्री विनोद कुमार, *सफाई नायक, देहरादून छावनी*

49 वर्षीय विनोद कुमार देहरादून छावनी बोर्ड में सफाई कर्मचारियों के पर्यवेक्षक हैं। उन्हें 15 साल पहले पदोन्नत किया गया था, इससे पहले वह खुद एक सफाई कर्मचारी थे। कुमार ने अपना कामकाजी जीवन एक दिहाड़ी मजदूर के रूप में आरंभ किया। निरंतर धैर्य, कड़ी मेहनत और प्रतिरोधक्षमता ने उन्हें आज यहां तक पहुंचाया है। उनके परिवार में पत्नी, दो बेटियां और एक बेटा है, जो नगर पालिका में कार्यरत हैं। कुमार पढ़-लिख सकते हैं और उन्होंने कक्षा सात तक पढ़ाई की है ऐसा कुमार का कहना है।

पैनलिस्ट
श्रीमती माया प्रेम किशन, *सफाई कर्मचारी, देहरादून छावनी*

माया को अपनी उम्र का अंदाजा इसी हिसाब से लगता है कि वह 2026 में सेवानिवृत्त होंगी। जीवन में तमाम कठिनाईयों के बावजूद वे सफाई कर्मचारी के रूप में एक पक्की सरकारी नौकरी के लिए आभारी हैं। पक्की सरकारी नौकरी का होना उनकी कृतज्ञता का प्रमुख कारण है। उनके पति की मृत्यु तब हो गई थी जब उनका सबसे बड़ा बेटा मात्र तेरह वर्ष का था। यह उसका काम ही था जिसने उन्हें प्रेरित किया कि वह जीवित रहे। अनपढ़ होने के बावजूद, उन्होंने अपने चार बेटों को अकेले ही पाला, और परिवार में वह सबसे ज्यादा कमाती हैं। सेवानिवृत्त होने के बाद भी वह कमाई जारी रखने की योजना बना रही हैं।

पैनलिस्ट
श्री राकेश कुमार, *सीवर वर्कर (स्वच्छता मित्र)*

राकेश कुमार 28 साल के हैं और देहरादून में घरों से बंद सीवर लाइनों को खोलने का काम मोबाइल कॉल के माध्यम से स्वछंद रूप से करते हैं। वह इस काम को हाथ से, बांस से या अगर बुलाने वाला व्यक्ति यदि व्यय कर सकता है, तो वह मशीन से भी करता है जिसे वह कुछ घंटों के लिए किराए पर लेते हैं। निरक्षर राकेश करीब नौ साल से यह काम कर रहे हैं और काम न होने पर दिहाड़ी मजदूर के तौर पर भी काम करते हैं। वह शादीशुदा है और उसके दो छोटे बच्चे हैं।

पैनलिस्ट

श्रीमती आरती - *कूड़ा बीनने वाली (स्वच्छता मित्र)*

25 वर्षीय आरती का दिन सुबह 5 बजे शुरू होता है और वह शाम 4 बजे तक काम करती है, और प्रतिदिन लगभग 100-200 रुपये कमाती है। मूल रूप से बिहार की रहने वाली आरती देहरादून में अपने पति, जो एक दिहाड़ी मजदूर है, और अपने बेटे, जो बड़ा होकर कार मैकेनिक बनना चाहता है, के साथ रहती है।

संचालक

श्रीमती प्रेरणा रतूड़ी - *लीड - रिसर्च एंड डॉक्यूमेंटेशन, एसडीसी फाउंडेशन, उत्तराखंड*

एक पत्रकार और स्वतंत्र लेखिका-संपादक, प्रेरणा रतूड़ी ने द इंडियन एक्सप्रेस, बिजनेस स्टैंडर्ड, हिंदुस्तान टाइम्स, द हिंदू, एंटरप्रेन्योर, बिजनेस टुडे और अन्य ऐसे समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे है। वह संगठनों को उनकी सामग्री और दस्तावेजीकरण की रणनीति बनाने में भी मदद करती है। एसडीसी में, वह अनुसंधान और दस्तावेजीकरण के लिए अग्रणी हैं, ये वे दो क्षेत्र हैं जिसके लिए वह भावुक हैं, और खुद को इसमें जीवनभर सीखने वाली मानती हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्नावली

1. *आपकी नियमित दिनचर्या क्या है?*
2. *क्या इस व्यवसाय में आने के बाद से आपके लिए पैसे, सम्मान, काम के घंटे आदि के मामले में चीजें बदल गई हैं?*
3. *आप क्या चाहेंगे कि सरकार आपके लिए ये करे?*

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

श्री विनोद कुमार : *"मुझे अपना काम पसंद है क्योंकि मैं जो करता हूं उसके लिए मुझे सम्मान और मान्यता मिलती है, और यह मुझे और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है। पिछले लगभग एक दशक में सफाई कर्मचारियों के लिए चीजें बहुत बदल गई हैं। पहले तो लोग हमें अपने घरों में भी घुसने नहीं देते थे अब, कई लोग हमें उनके साथ बैठने और एक कप चाय पीने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जहां तक उत्पन्न होने वाले कचरे का सवाल है, अब पहले से कहीं अधिक प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है।"*

श्रीमती माया प्रेम किशन : *नोट- वह बेहद शर्मा रही थी और घबराई हुई थी और बिल्कुल भी बात नहीं कर रही थी।*

श्री राकेश कुमार : *"मैं वही करता हूं जो मुझे जिविकोपार्जन के लिए आवश्यक लगता है। यह ऐसी चीज नहीं है जिसका मैंने विचार किया हो लेकिन मुझे अपने परिवार का ख्याल रखना है। मुझे अपने पैसे से दस्ताने और अन्य सुरक्षात्मक उपकरण खरीदने होंगे। मैं पैसे बचाकर अपने लिए एक मशीन खरीदने की कोशिश कर रहा हूं, ताकि मैं अधिक सीवेज पाइप साफ कर सकूं, बेहतर कमाई कर सकूं और ऐसा करते हुए अपने स्वास्थ्य को जोखिम में न डालूं। ईमानदारी से कहूं तो यह कम गंदा भी होगा।"*

पैनलिस्टों की अंतर्दृष्टि से

श्रीमती आरती : *"सारा दिन खुले में काम करना कोई मजाक नहीं है। मैं अपना खाना खुद लेकर आती हूं लेकिन पानी और शौचालय हर दिन बड़ी चुनौतियां हैं। मैं कचरा उठाते समय यथासंभव सावधानी बरतने की कोशिश करती हूं और अब यह पता लगाने में सक्षम हूं कि किस कचरे में खुले ब्लेड, नाखून और कांच के टुकड़े हो सकते हैं। मुझे अपने बेटे की वजह से अपनी सेहत का ख्याल रखना है। मेरे पड़ोस में जहां मैं रहती हूं, वहां मेरे कुछ दोस्त हैं, अन्यथा पूरा दिन एक कूड़े के ढेर से दूसरे कूड़े के ढेर तक जाते-जाते चुपचाप बीत जाता है।"*

आगे की राह

1. *सफाई कर्मचारियों और कूड़ा बीनने वालों को उनके काम के लिए अधिक मान्यता दी जानी चाहिए और उनके तथा कूड़ा पैदा करने वालों के बीच की खाई को कम करने की जरूरत है।*
2. *शहर को दैनिक अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र में काम करने वालों के लिए स्वच्छ शौचालय और मुफ्त पीने के पानी जैसी अधिक सुविधाओं की आवश्यकता है।*
3. *सफाई कर्मचारियों को नियमित अंतराल पर स्वास्थ्य और स्वच्छता पर प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और उनमें गरिमा और आत्म-मूल्य की भावना विकसित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।*

विदाई सत्र

मुख्य अतिथि :
श्री प्रेमचंद अग्रवाल
माननीय शहरी विकास मंत्री,
उत्तराखंड सरकार

श्री प्रेम चंद अग्रवाल उत्तराखंड के शहरी विकास मंत्री हैं और देहरादून जिले के ऋषिकेश विधानसभा क्षेत्र से उत्तराखंड विधान सभा के सदस्य हैं। श्री अग्रवाल लगातार तीन बार ऋषिकेश से विधायक रहे हैं।

मैं माउंटेन स्वच्छता टेक्नोलॉजी चैलेंज की सराहना करता हूं जो भौगोलिक रूप से चुनौतीपूर्ण राज्य उत्तराखंड के लिए बिल्कुल सही साबित होगा। साथ ही, मैं इस तथ्य को दोहराना चाहता हूं कि स्वच्छता अभियान को जनता से जुड़ा एक आंदोलन बनाना होगा और यह केवल सरकारी विभागों की जिम्मेदारी नहीं हो सकती।

श्री गणेश जोशी
माननीय सैनिक कल्याण,
कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री,
उत्तराखंड सरकार

उत्तराखण्ड सरकार के राज्य कैबिनेट मंत्री, श्री गणेश जोशी देहरादून जिले के मसूरी विधानसभा क्षेत्र से चौथी बार उत्तराखंड विधानसभा के सदस्य हैं।

मैं आग्रह करता हूं कि हमारे सफाई कर्मचारियों को और अधिक सुविधाएं दी जाएं और चौपाल की यह अवधारणा, जो देहरादून में अपनी तरह की पहली है, नियमित समय पर और राज्य के विभिन्न हिस्सों में आयोजित की जानी चाहिए। शहरी विकास विभाग को दून कैंट स्वच्छता चौपाल से सीख लेते हुए इस तरह के और आयोजन करने चाहिए।

नोट

माउंटेन स्वच्छता टेक्नोलॉजी चैलेंज *का अनावरण श्री प्रेमचंद अग्रवाल, माननीय शहरी विकास मंत्री, उत्तराखंड सरकार द्वारा किया गया। यह एक अनूठी प्रतियोगिता है जिसमें देश भर से स्टार्टअप्स, उद्यमियों और उच्च शिक्षा संस्थानों के छात्रों को उत्तराखंड राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों पर विशेष जोर देते हुए ठोस और प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए अभिनव समाधान विकसित करने के लिए आमंत्रित किया गया है। चयनित स्टार्ट-अप को विशेषज्ञ सदस्यों के एक पैनल द्वारा तैयार किया जाएगा।*

यह चुनौती स्टार्टअप्स और छात्रों पर लक्षित है जो भारत के कस्बों, पर्यटन स्थलों, ग्रामीण क्षेत्रों और पर्वतीय राज्यों में घाटियों और ढलानों से पुराना कचरा उठाने के लिए एक मशीन डिजाइन करेंगे।

हमारा लक्ष्य अपशिष्ट प्रबंधन की दक्षता में सुधार, सामाजिक प्रभाव में वृद्धि, अपशिष्ट मूल्य श्रृंखला की पारदर्शिता में सुधार और सिंगल यूज -प्लास्टिक के उपयोग को कम करके उत्तराखंड के ठोस और प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियों को हल करने के लिए प्रौद्योगिकी और सामाजिक नवाचार के शिखर पर काम करने वाले तीन स्टार्ट-अप का समर्थन करना है।

विषय-वस्तु

1. *पहाड़ी ढलानों से कचरा उठाने के लिए तकनीक-आधारित समाधान।*

प्रस्ताव

1. *उचित अनुपात में सफल प्रारूप को वित्तीय एवं परिवहन सहायता प्रदान की जायेगी।*
2. *अपशिष्ट और प्रायोगिक मैदानों तक पहुंच की सुविधा हेतु नगर पालिकाओं का स्टार्ट-अप्स को समर्थन।*
3. *व्यावसायिक मामलों के विकास में प्रशिक्षण।*
4. *उद्योग विशेषज्ञों से परामर्श सत्र।*
5. *पूर्वमंत्रणा सत्र एवं पुरस्कार समारोह।*

प्रक्रिया

1. ***चैलेंज प्रारम्भ*** *- आवेदन जमा करने की शुरुआत।*
2. ***आवेदन पंजीकरण समाप्ति*** *- गूगल फॉर्म पर एक आवेदन के माध्यम से स्टार्ट-अप की जाँच।*
3. ***प्रारम्भिक चयन*** *- प्राप्त आवेदनों की जाँच और स्टार्ट-अप का चयन।*
4. ***चयन*** *- परामर्श के बाद स्टार्ट-अप हमारे विशेषज्ञ सदस्यों स्वरा निर्णय हेतु वर्चुअल पिच इवेंट के लिए 10 मिनट की वीडियो पिच तैयार करेगी।*
5. ***पुरस्कार समारोह*** *- चयन दौर से स्टार्ट-अप को पुरस्कार के लिए चुना जाएगा।*

PLEDGE

चौपाल का समापन उपस्थित सभी लोगों द्वारा निम्नलिखित प्रतिज्ञा लेने के साथ हुआ।

शपथ

1. **मैं शपथ लेता /लेती हूं कि उत्तराखंड राज्य को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए अपने स्तर पर हर संभव प्रयास करूंगा/करूंगी।**
2. **मैं कूड़ा इधर उधर नहीं फेंकूंगा/फेंकूंगी। सिंगल यूज प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करूंगा/करूंगी । और अपने घर से ही सूखा और गीला कूड़ा अलग करूंगा/करूंगी।**
3. **मैं यह भी शपथ लेता/लेती हूं कि वर्ष 2023 में कम से कम 5 लोगों को स्वच्छता मुहिम से अवश्य जोड़ूगा/जोडूंगी।**

प्रतिभागी कम्पनी

अरज फैशन

प्रमुख व्यक्ति
श्रीमती मोनिका - *कम्पनी मालिक*

2018 में स्थापित, अरज फैशन एक तेजी से उभरती कंपनी है जो शत प्रतिशत पर्यावरण-अनुकूल बैग/थैले और पैकेजिंग उत्पाद का निर्माण और आपूर्ति करती है, इन बैगों का उपयोग विज्ञापन, प्रचार और विपणन के लिए किया जा सकता है। ये बैग जूट, कपास और दोनों (जूको) के मिश्रण से बने होते हैं, और विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जा सकते हैं जैसे खरीदारी, बीच बैग, सौंदर्य प्रसाधन उत्पाद स्टोर बैग, शराब की बोतल बैग, फाइल फोल्डर, लैपटॉप बैग, महिलाओं के बैग, बटुए, और उपहार देने के प्रयोजनों आदि के लिए। कच्चा माल, सिलाई, डिजाइनिंग और मुद्रित किसी भी स्वरूव के ये उत्पाद रासायनिक रंगों से मुक्त होते हैं। ये बैग गुणवत्ता के उच्चतम मानकों को ध्यान में रखते हुए बनाए जाते हैं। कंपनी सजावट के काम में प्रवीण है और शोरूम, मॉल और निगमों को अल्प सूचना पर उचित मूल्य पर पैकेजिंग बैग उपलब्ध कराने के लिए जानी जाती है। अरज फैशन के ग्राहकों में फिलियो, नियो कॉमफोर्ट, मेटिका, यावी कॉस्मेटिक आदि शामिल हैं। अन्य संस्थाओं के लिए कंपनी का संदेश है कि- "अरज के पर्यावरण सह-अनुकूल जूट, कपास और जूको बैग के साथ अपने ब्रांड को रचनात्मक, नैतिक और आर्थिक रूप से बढ़ावा दें।" अरज ने विश्व पर्यावरण एक्सपो, 2022 में सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों के लिए ग्रीन इंडिया अवार्ड 2022 भी जीता है।

मन की बात में प्रधानमंत्री द्वारा उल्लेख

हमारी उत्पाद श्रृंखला

अमेरिकी वाणिज्य सचिव श्रीमती जीना रायमोंडो द्वारा सराहना

वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण - अनुकूल उत्पाद

8929035447 fashionaraj@gmail.com www.arajfashion.com

प्रतिभागी कम्पनी

अटेरो

प्रमुख व्यक्ति
श्री आशीष रैना - *प्रबंधक, व्यवसाय विकास*

अटेरो भारत की सबसे बड़ी इलेक्ट्रॉनिक परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनी है, और इसका लक्ष्य पर्यावरण के अनुकूल तरीके से जीवनावधि समाप्त इलेक्ट्रॉनिक्स और लिथियम-आयन बैटरी से संसाधनों पर पुनर्विचार, पुनः रचना, पुर्नस्थापित और पुर्नपयोग करना है। कंपनी ने स्वच्छ तकनीक, सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने, शून्य-जल अपशिष्ट संचालन और ईपीए मानदंडों का अनुपालन करने में भी अग्रणी भूमिका निभाई है। नासा द्वारा मान्यता प्राप्त प्रौद्योगिकी नवप्रवर्तक, अटेरो ने विघटनकारी तकनीक विकसित की है जो इसे कम लागत में पर्यावरण-अनुकूल, शुरू से अंत तक ई-कचरा पुनर्चक्रण और दुर्लभ कीमती धातुओं के निष्कर्षण करने के योग्य बनाती है।

अटेरो का लक्ष्य लिथियम-आयन बैटरियों के पुनर्चक्रण में वैश्विक नेतृत्वकर्ता बनना है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इसके पास विश्व स्तर पर बीस से अधिक पेटेंट और इस श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ तकनीक है, जो उच्चतम गुणवत्ता की लगभग 99 प्रतिशत धातुओं को पुर्नप्राप्त करती है और उन्हें वापस बाजार अर्थव्यवस्था में लाती है। क्लीन ई-इंडिया कंपनी का नवीनतम एकीकृत उपभोक्ता द्वारा ई-कचरा वापसी कार्यक्रम है, जो टिकाऊ तरीके से ई-कचरे के संगठित संग्रह, प्रबंधन और पुर्नचक्रिकरण को सुनिश्चित करता है।

मजबूत आईटी समाधानों द्वारा समर्थित भारत के सबसे बड़े उत्क्रम प्रचालन तंत्र के साथ ई-कचरे के प्रबंधन में अपने 360-डिग्री दृष्टिकोण के साथ, अटेरो विश्व स्तर पर प्रसिद्ध सात ई-कचरा प्रबंधन कंपनियों में से एक है।

अटेरो पुनर्चक्रण सुविधा

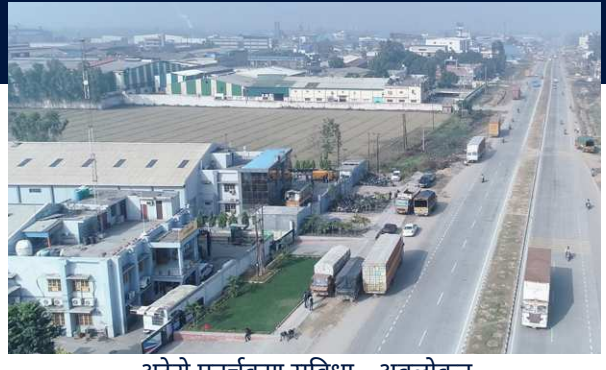
अटेरो पुनर्चक्रण सुविधा - अवलोकन

अत्याधुनिक मशीनरी

पुर्नचक्रण मशीनें

99868 60725 aashishraina@attero.in https://attero.in

प्रतिभागी कम्पनी

ईकॉन्शियस

प्रमुख व्यक्ति

श्रीमती सोनल शुक्ला - *सह-संस्थापक और सीईओ*

ईकॉन्शियस एक सामाजिक प्रभाव डालने वाला स्टार्टअप है, जो प्लास्टिक कचरे को घरेलू सजावट, सार्वजनिक उपयोगिता और कम्पनियों में उपहार देने वाले उत्पादों में पुनर्चक्रित करता है। कंपनी एक प्रभावी और कुशल पुर्नचक्रण मॉडल बनाने के लिए मौजूदा उपभोक्ता-उपरांत (खरीद उपरांत) व्यापार पारिस्थिति में क्रांति ला रही है। कंपनी पृथक्करण स्रोत व कचरा उठाने की सेवा प्रदान करके संधारणीयता को बढ़ावा देती है। यह प्रक्रिया पूरी तरह से चक्रीय और सतत् है। कंपनी अपने प्रयासों से चार संधारणीय विकास लक्ष्यों को पूरा करती है - संधारणीय शहर और समुदाय, जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन, जलवायु कार्रवाई और पानी के अंदर जीवन।

अपनी स्थापना के बाद से, कंपनी ने खरीद उपरांत 90,000 किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक का पुनर्चक्रण किया है। पुनर्नवीनीकरण प्लास्टिक के साथ 83,000 किलोग्राम से अधिक कार्बन डाइ ऑक्साइड उत्सर्जन बचाया गया, और स्रोत संग्रह के साथ लैंडफिल पर लगभग 4,600 क्यूबिक मीटर जगह बचाई गई।

कंपनी की विक्रय खूबियों में से एक यह है कि वह ग्राहक की आवश्यकता के अनुसार अनुकूल सेवा प्रदान करती है। इसने एचसीएल फाउंडेशन, ह्यूमाना पीपल टू पीपल एनजीओ, जीवन स्तंभ, ग्रीन ड्रीम फाउंडेशन और अन्य जैसे संगठनों के लिए सीएसआर परियोजनाएं की हैं। कंपनी के प्लास्टिक पुर्नचक्रण परिपाटी हेतु उत्पादों की श्रृंखला को व्हिस्लिंग वुड्स इंटरनेशनल, रीसिटी, यस फुल सर्कल और ग्रीनोबार जैसी कंपनियों का भी समर्थन मिला है।

संग्रह केन्द्र से एकत्रित किया गया कच्चा माल

पुनर्नवीकरण सामाग्री से बने डस्टबिन

ईकॉन्शियस उत्पाद

ईकॉन्शियस उत्पाद

9582066095 team.econscious@gmail.com www.econscious.co.in

प्रतिभागी कम्पनी

एलेफो बायोटेक प्रा. लिमिटेड

प्रमुख व्यक्ति
श्री रोहित कुमार - *निदेशक, एलेफो बायोटेक प्रा. लिमिटेड*

सितंबर 2014 में स्थापित, विकेंद्रीकृत/वहनीय अपशिष्ट जल उपचार प्रणालियों के व्यवसाय में है और भारत में भारतीय रेलवे को एएमआई (बॉयोटॉयलेट में प्रयुक्त होने वाला बैक्टीरिया) का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। यह बायो-डाइजेस्टर और बायो-टॉयलेट के निर्माण के लिए डीआरडीई की बायो-डाइजेस्टर प्रौद्योगिकी के लिए प्रोद्योगिकी धारक भी है। पिछले आठ वर्षों के दौरान ईबीपीएल के अनुभव के आधार पर और इस तथ्य पर विचार करते हुए कि नई और उन्नत तरल अपशिष्ट उपचार प्रणालियों की तत्काल आवश्यकता और प्रबल संभावना है, कंपनी ने संयुक्त राज्य अमेरिका के दो प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के सहयोग से नई उन्नत अपशिष्ट उपचार प्रणाली विकसित की है।

एलेफो ने भारत के 22 राज्यों और विदेशी देश में 70 से अधिक परियोजनाओं को क्रियान्वित किया है, और किसी भी प्रकार के अपशिष्ट जल के उपचार में दक्ष है, जिसमें बहुत पतले अपशिष्ट जल से लेकर सेप्टिक टैंक से निकलने वाले उच्च प्रदूषण वाले अपशिष्ट जल भी शामिल हैं। एलेफो को उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ का पहला मलीय कीचड़ उपचार (एफएसटीपी) संयंत्र चालू करने का गौरव भी प्राप्त है।

भारत में बीएमजीएफ के साथ सहयोग के एक हिस्से के रूप में, एलेफो ने देश में वहनीय अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली स्थापित की है। न्यू जेनरेटर वहनीय अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली ने पिछले एक साल में लगातार उच्च शक्ति वाले अपशिष्ट जल का एनजीटी अनुरूप उपचार हासिल किया है, जो दुनिया में अब तक किसी अन्य प्रणाली ने हासिल नहीं किया है।

इसके ग्राहकों में दिल्ली नगर निगम, यूपी जल निगम लिमिटेड, आईटीबीपी, बीएसएफ और छावनी बोर्ड जैसे रक्षा बलों के प्रतिष्ठान, और यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया और सेल जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाएं और जेएसएल, ओमैक्स, हिंडाल्को जैसे निजी क्षेत्र की संस्थाएं भी शामिल हैं।

एफआरपी से बना बायो-डाइजेस्टर टैंक

पुर्नप्राप्ति अपशिष्ट

उपचार प्रणाली

96908 81234 rohit@elefobiotech.com www.elefobiotech.com

प्रतिभागी कम्पनी

नेप्रा रिसोर्स मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड

प्रमुख व्यक्ति
श्री रोनक व्यास - *प्रबंधक*

2006 में अहमदाबाद गुजरात में स्थापित की गई भारत की अग्रणी अपशिष्ट प्रबंधन कंपनी है जिसका लक्ष्य कई सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करना है। कम्पनी पांच सामग्री पुनर्प्राप्ति सुविधाओं (एमआरएफ) और 560 मीट्रिक टन प्रति दिन (एमटीपीडी) की एक परिचालन क्षमता के साथ पूरे भारत में संचालित होती है। नेप्रा "अपशिष्ट भराव क्षेत्र को शून्य अपशिष्ट बनाने" और "इन शाखाओं का बंद करने" के अपने आदर्श लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करती है, जिससे एक चक्रिय अर्थव्यवस्था का निर्माण होता है। इसका आकार समावेशी है और सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव पैदा करता है।

कंपनी रणनीतिक पर्यावरणीय समाधानों को लागू करके समुदायों और संगठनों को स्थिर, कुशल और संगठित बनने में मदद करती है। अपने पारदर्शी, तकनीक-संचालित और समावेशी मॉडल के साथ, नेप्रा शुष्क अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र में उत्पन्न चुनौतियों के लिए अग्रणी समाधान है।

कंपनी के ग्राहकों में अहमदाबाद नगर निगम, जामनगर नगर निगम जैसे सरकारी निकाय और ली मेरिडियन, रमाडा, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, वोडाफोन, अमेजॉन, एजिस, अमूल, रिलायंस रिटेल और अन्य कंपनियां शामिल हैं।

अपशिष्ट प्रबंधन

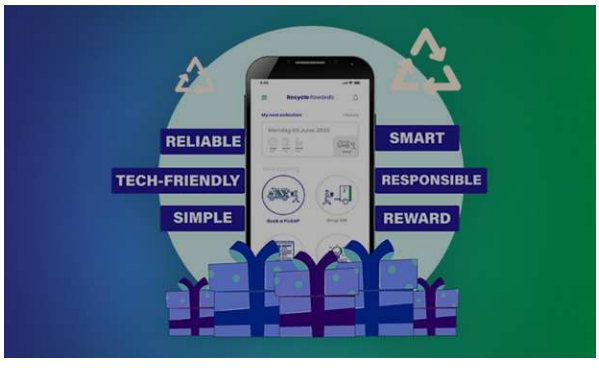

पुर्नचक्रण के पुरस्कार

9106610298 info@nepra.co.in http://nepra.co.in

प्रतिभागी कम्पनी

पैडकेयर लैब्स

प्रमुख व्यक्ति
श्रीमती आसावरी केन - *संस्थापक सदस्य*

पैडकेयर ने दुनिया की पहली टिकाऊ मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन सेवा (एमएचएमएस) विकसित और प्रमोचन की है जो महिला सशक्तिकरण, स्थिरता और कचरा बीनने वालों की गरिमा बनाए रखने जैसे मुद्दों से जुड़ी हई है। कंपनी उपयोग किए गए सैनिटरी पैड से हानिरहित और रोगाणुरहित उत्पाद बनाने के लिए अपनी पेटेंट 5डी तकनीक के माध्यम से एक पूर्ण पुर्नचक्रीयता समाधान प्रदान करती है। इसका उपयोग कागज और पैकेजिंग जैसे उत्पाद बनाने और रासायनिक उद्योगों में किया जाता है।

हर साल 12 अरब सेनेटरी पैड भारत के अपशिष्ट भराव क्षेत्र में पहुंच जाते हैं। उनके प्लास्टिक और एसएपी सामग्री के कारण, इनमें से प्रत्येक पैड को पूरी तरह से विघटित होने में पांच शताब्दियों का समय लगता है। 355 मिलियन मासिक धर्म वाली महिलाओं में से, 52.8 प्रतिशत अपने अवशोषक को अत्यधिक उपयोग करती है और अस्वच्छ सार्वजनिक शौचालयों में बदल देती हैं, जहां उन्हें घृणा का सामना करना पड़ता है और यूरिन संक्रमण (यूटीआईद्ध के बढ़ते जोखिम का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, इस्तेमाल किए गए सैनिटरी पैड जगह घेरते हैं और हानिकारक गैसों का उत्सर्जन करते हैं। कचरा बीनने वाले बिना किसी सुरक्षात्मक उपकरण के शहरी इलाकों से सैनिटरी कचरा इकट्ठा करते हैं।

ऐसे सभी मुद्दों और अन्य मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, पैडकेयर ने महाराष्ट्र के महाबलेश्वर में अपनी पहली सामुदायिक स्तर की परियोजना शुरू की जो विविध क्षेत्रों को अपनी सेवाएं प्रदान करता है जैसे हाउसिंग सोसायटी, स्कूलों और साझेदारी मॉडल पर काम करता है। इसका सामूहिक प्रभाव यह है कि यह अपशिष्ट भराव क्षेत्रों में हानिकारक उत्सर्जन को कम करता है। इस प्रकार इस्तेमाल किए गये सेनेटरी पैड को जलाने के बजाय संरक्षित किया जा सकता है।

पैडकेयर वेंडिंग मशीन

पैडकेयर एक्स

8850867223 aasawari.kane@padcarelabs.com www.padcarelabs.com

प्रतिभागी कम्पनी

रिसाइकल

प्रमुख व्यक्ति

श्री नेहाल राव - *मार्केटिंग एवं पीआर (पब्लिक रिलेशन) मैनेजर*

रिसाइकल एक क्लीनटेक संगठन है जो व्यवसायों को उनके पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने और उनके उद्योग में सतत् प्रयास के लक्ष्यों के अग्रणी के रूप में उभरने के लिए स्थायी प्रथाओं को अपनाने में मदद करता है। यह व्यवसायों द्वारा अपनी संधारणीयता संबंधित प्रक्रियाओं को प्रबंधित करने व एक बंद-लूप चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के तरीकों में सकारात्मक बदलाव को सक्षम बनाने के लिए डिजिटल समाधान प्रदान करता है।

रिसाइकल वर्तमान में पूरे भारत में संचालित है और 4,00,000 मीट्रिक टन से अधिक कचरे को स्थांतरित कर अपशिष्ट भराव क्षेत्र से हटा दिया गया है। रिसाइकल ने 210+ उत्पादों, 100+ थोक उत्पादक, 300+ सेवा प्रदाताओं और संग्रहकर्ताओं व 325+ पुर्नचक्रणकर्ता और सह-संसाधक के साथ काम किया है।

कम्पनी को राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा डिजिटल इंडिया अवार्ड, एपीएसी में फास्ट कंपनी की सबसे नवीन कंपनियों और विश्व आर्थिक मंच द्वारा टेक पायनियर सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कारों से मान्यता मिली है।

कंपनी के समाधानों में शामिल हैं:

1. डिजिटल डीआरएस - डिजिटल जमा धन वापसी प्रणाली के तहत, ग्राहक प्लास्टिक पैकेजिंग के साथ उत्पाद खरीदते समय एक छोटी जमा राशि का भुगतान करते हैं, जो कि रिसाइकल द्वारा स्थापित कई जमा धन वापसी केंद्रों में से किसी पर भी प्लास्टिक की बोतल वापस करने पर उन्हें वापस कर दी जाती है। केदारनाथ यात्रा मार्ग में डीआरएस सफलतापूर्वक लागू किया गया।
2. ईपीआर - व्यवसायों के लिए वर्तमान विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व (ईपीआर) नियमों का अनुपालन करने के लिए डिजिटल मंच। इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के साथ, कम्पनियाँ हर समय में अपनी ईपीआर पूर्ति प्रक्रिया की योजना और निगरानी कर सकते हैं।
3. एकचक्रीय मंच - ईएचएस और स्थिरता अधिकारियों की मदद करने के लिए एक मंच, जिसमें उनके ईएसजी स्कोर में सुधार करने के लिए व कुशल संचालन के लिए वास्तविक समय की दृश्यता और कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि शामिल है।
4. प्लास्टिक तटस्थता - उत्पादों के लिए अपने प्लास्टिक उत्पादन को मापने, योजना बनाने व पूरा करने, और समायोजन में 360° खोजी क्षमता के साथ व प्लास्टिक तटस्थता के साथ स्थिर नेतृत्वकर्ता के रूप में सामने आए।

अखिल भारतीय संग्रह केन्द्र

प्लास्टिक जमा धन वापसी केन्द्र डीआरएस

प्रतिभागी कम्पनी

शायना इको-यूनिफाइड

प्रमुख व्यक्ति

श्री नितिन श्रीवास्तव - *सह-संस्थापक और मुख्य विपणन अधिकारी*

शायना इको-यूनिफाइड भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप और आईएसओ: 9001:2015 प्रमाणित कंपनी है जिसे पर्यावरण में प्लास्टिक कचरे के ढेरों को कम करने के लक्ष्य के साथ शामिल किया गया है। यह पुनर्चक्रित प्लास्टिक कचरे से किफायती सामग्री और संरचनात्मक उत्पाद बनाकर इस कार्य को पूर्ण करता है, इस प्रकार यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ भविष्य का निर्माण करता है।

यह वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (एनपीएल) के सहयोग से संभव हुआ है। जिनके साथ इस तकनीक को कई अनुप्रयोगों में उपयोग के लिए विकसित, परीक्षण और प्रमाणित किया गया था।

अपशिष्ट प्लास्टिक का उपयोग करके, कंपनी पेवर टाइल्स, फर्नीचर, पैनल, मॉड्यूल व यूनिट आदि के रूप में उच्च गुणवत्ता सामग्री का उत्पादन और पुनर्चक्रण करती है।शायना के पास भारत में इस तकनीक का विशेष लाइसेंस है। अब तक, कम्पनी ने जिम्मेदारीपूर्वक 20,00,000 किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक कचरे का पुनर्चक्रण किया है और इनसे सामाजिक उपयोग के लिए उत्पाद तैयार किए हैं।

उत्पाद, गर्मी प्रतिरोधी, मौसम प्रतिरोधी, चिप प्रतिरोधी, अम्ल प्रतिरोधी, संक्षारण प्रतिरोधी, स्थैतिकी रोधी, एंटी-माइक्रोबियल, जलरोधी, हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह पुर्नचक्रित करने योग्य हैं। उत्पाद बेहतर संरचनात्मक स्थिरता, व लंबी जीवनावधि और पर्यावरण के अनुकूल गुववत्ता वाले हैं। शायना के उत्पादों का उपयोग करने से कुशल प्लास्टिक अपशिष्ट निपटान, ऊर्जा की बचत, कार्बन फुटप्रिंट आय, वनीकरण को बढ़ावा मिलता है, और तेजी से घटते प्राकृतिक भंडार के दोहन से बचाव होता है।

इसके अलावा, सभी उत्पादों का परीक्षण राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, श्रीरामलैब और एसजीएस जैसी प्रतिष्ठित प्रयोगशालाओं द्वारा विभिन्न मापदंडों (आरओएचएच सहित) पर किया जाता है। कंपनी के ग्राहकों में छावनी परिषद देहरादून, गुड़गांव नगर निगम, कानपुर स्मार्ट सिटी, ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम, परमाणु ऊर्जा विभाग, उत्तराखंड प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, बाढ़ एवं सिंचाई विभाग दिल्ली, नेस्ले, पर्फर्टी वैन मेले, लोरियल, बिसलेरी, टाटा मोटर्स, टाटा पावर, फ्लिपकार्ट, शेल पेट्रोलियम और अन्य शामिल हैं।

हमारे कुछ अपशिष्ट प्रबंधन उत्पाद पुनर्चक्रित सामाग्री से विकसित किए गये हैं

7400068207 nitin@shaynaecounified.com www.shaynaecounified.com

प्रतिभागी कम्पनी

स्प्रूस अप

प्रमुख व्यक्ति
श्रीमती नीति सूर्यवंशी - *मुख्य विपणक*

स्प्रूस अप एक मूल उपकरण निर्माता और जटायु मशीनों का प्रर्वतक है, जो भारत की पहली पूरी तरह से संपर्क रहित सार्वजनिक कचरा सफाई करने वाली मशीनें हैं। इन मशीनों को विशेष रूप से ठोस और प्लास्टिक कचरे को साफ करने के लिए निर्मित और अभियंत्रित किया गया है। प्लास्टिक जो अक्सर सड़कों, राजमार्गों, नदी और झील के तटबंधों या बाजार क्षेत्रों के आसपास कचरे के ढेर का रूप ले लेते हैं। यह मिश्रित अपशिष्ट है और बड़े पैमाने पर इसे साफ करना बेहद कठिन है। जटायु के उपयोग के साथ, जो शहरों और कस्बों के लिए एक बड़े और शक्तिशाली वैक्यूम क्लीनर की तरह है, इस कचरे को आसानी और त्वरित गति से एकत्र किया जा सकता है, जिससे अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव आएगा।

वर्तमान में, जटायु मशीनें मुंबई, दिल्ली, पुणे, चेन्नई, देहरादून और चंडीगढ़ सहित 18 राज्यों के 45 से अधिक शहरों में तैनात हैं। ये मशीनें संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और न्यूजीलैंड में भी चालू हैं। अब तक, जटायु मशीनों ने 15,000 टन से अधिक कचरा साफ करने में मदद की है, जिसमें 1,600 टन प्लास्टिक कचरा भी शामिल है।

सुपर जटायु

जटायु एचडी

86559 92128 niti.s@spruceup.in www.spruce-up.in

प्रतिभागी कम्पनी

यूनेको

प्रमुख व्यक्ति
श्री अंकित त्रिपाठी - *संस्थापक*

यूनेको "यूनिक" और "ईको" दो अंग्रेजी शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है कि अपने अवतार से पहले कंपनी कभी न देखे गए पर्यावरण-अनुकूल और टिकाऊ उत्पाद प्रदान करती है।

"स्थायी खुशी साझा करने" के आदर्श वाक्य के साथ, कंपनी जलवायु सकारात्मक उत्पाद समाधानों की एक विशेष अभिनव श्रृंखला पेश करके जलवायु परिवर्तन और प्लास्टिक प्रदूषण के पर्यावरणीय खतरों को रोकने का प्रयास करती है, जो विभिन्न जैविक, प्राकृतिक, औद्योगिक अपशिष्ट और अजैव निम्नीकरणीय पदार्थ (बायोडिग्रेडेबल) सामग्रियों का उपयोग करके बनाई जाती है।

कंपनी के ग्राहकों में गोदरेज कैपिटल, सोप्रा स्टेरिया, एमएसएमई, हार्वर्ड बिजनेस स्कूल, एनईएसएसी, वेओलिया आदि शामिल हैं।

संस्थापक सदस्य

यूनेको के उत्पाद

पर्यावरणीय अनुकूल उत्पादों की श्रृंखला

96505 75205 info@uneako.com www.uneako.com

दून कैंट स्वच्छता चौपाल में प्रतिभागियों की सूची

क्रं.सं.	कम्पनी / स्वयं सहायता समूह का नाम	संपर्क	मोबाइल नं0
1	आकांक्षा इन्टरप्राइजेज	श्री गिरिजेश चौबे	7982602342
2	अलनाटि वेंचर्स	श्री विनोद मनचंदा	7087417151
3	आनंद मटका ट्रेडिंग कंपनी	श्री आनंद मट्टा	7088991199
4	अरज फैशन	श्रीमती मोनिका	8929035447
5	अटेरो रीसाइक्लिंग प्राइवेट लिमिटेड	श्री आशीष रैना	9986860725
6	बायोपाप्रो प्राइवेट लिमिटेड	श्री समीर अहमद	9819761236
7	कैरीवेल पैकेजिंग प्राइवेट लिमिटेड	श्री अमितांशु	9999963870
8	सीपैट देहरादून	श्री अभिषेक राजवंश	7457001351
9	क्लीन इंडिया वेंचर्स	श्री अभिषेक गुप्ता	9871692007
10	कॉमैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	श्री पुष्पेन्द्र सिंह	9899135506
11	कॉस्मिक हीलर्स प्राइवेट लिमिटेड	श्री अभिषेक गर्ग	7042001271
12	दरकशा इको सॉल्यूशन	श्री रूद्रांश	7042009908
13	इको बैम्ब्रिन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	डॉ0 निशा त्रिपाठी	9873495609
14	इकोलास्टिक प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड	श्री मनोज कुमार	9154995104
15	ईकोन्शियस	श्रीमती सोनल शुक्ला	9582066095
16	इकोवेयर सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड	श्री रोहित	8377004702
17	एलेफो क्लीनटेक प्राइवेट लिमिटेड	श्री रोहित कुमार	9650507778
18	एनर्जीश्योर इको सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड	डॉ0 सुनित निभेरिआ	8826422130
19	ग्लोबल डब्ल्यूएमसी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	श्री रोनित बनर्जी	7992311636
20	गोएनवी टेक्नोलॉजीज प्रा. लिमिटेड	श्री मनोज नटराजन	9833479123
21	ग्रीनएसेट्स.इन (देहरादून)	श्री रोमिक राइ	9987917604
22	हिमालया ग्रीन्स	श्री आशुतोष गुप्ता	9418035001
23	इमेजिनेटिव फ्लेक्सीपैक्स लिमिटेड	श्री राकेश बंसल	9811319194
24	इण्डिया पॉल्यूशन कंट्रोल आग्रेनाइजेशन	श्री आशीष जैन	9312432405

क्रं.सं.	कम्पनी / स्वयं सहायता समूह का नाम	संपर्क	मोबाइल नं0
25	कुमार इंजीनियरिंग	श्री अरबिंद शर्मा	9650938241
26	लाइव हर्बोकेयर	श्री अर्जुन राज पराशर	7302908281
27	मुदिता एण्ड राजेश प्राइवेट लिमिटेड	श्री राधेश	6377611021
28	नेप्रा रिसोर्स मेनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड	श्री रोनक व्यास	9106610298
29	पैडकेयर लैब्स प्राइवेट लिमिटेड	श्रीमती आसावरी केन	9811972874
30	पीपुल्स एसोसिएशन फॉर टॉटल हेल्प एण्ड यूथ एपलॉज (पाथेय)	श्री गिरिजेश चौबे	7982602342
31	प्लेड्स इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड	श्री अभिजीत रॉय	7906249017
32	रायका ई वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड	श्री राजीव सचर	9897274151
33	आर-क्यूब रीसाइक्लिंग प्राइवेट लिमिटेड	श्री रवि रावरिया	8369684193
34	रिसाइकल	श्री तपन	7008019261
35	साहस	श्री सात्विक माणकटाला	9654987002
36	सावा इको पैकेजिंग एलएलपी	श्री राजीव गुप्ता	9818256405
37	स्क्रैपशाला	श्रीमती शिखा शाह	8400029536
38	शायना इको-यूनिफाइड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	श्री नितिन श्रीवास्तव	7400068207
39	स्प्रूस -अप इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड	श्रीमती नीति सूर्यवंशी	8655992128
40	ट्रेक मार्क इण्टरनेशनल	श्री कुणाल मनचंदा	9780174175
41	यूनेको - मेक प्लेनेट हैप्पी	श्री अंकित त्रिपाठी	9650575205
42	वेस्ट वॉरियर्स सोसायटी	श्री नवीन कुमार सदाना	7895267144
43	व्हाय वेस्ट वेडनसडेज फाउंडेशन	डॉ0 रूबी मखीजा	8800995594
44	जीरो वेस्ट इनकॉर्पोरेशन	श्री हिमांशु पटवाल	9997440639
45	स्वदेश कुटुंब आजीविका स्वयं सहायता समूह	श्रीमती तृप्ति थापा	7895944449
46	गोमती आजीविका स्वयं सहायता समूह	श्रीमती हंसी परिहार	7409118802
47	नित्य आजीविका स्वयं सहायता समूह	श्रीमती दीपांजली शर्मा	9897563771
48	धरोहर आजीविका स्वयं सहायता समूह	श्रीमती सविता लिंगवाल	9411576085
49	पूजा शिव महिला स्वयं सहायता समूह	श्रीमती सुनिता चौधरी	8533852979
50	कालिका आजीविका स्वयं सहायता समूह	श्रीमती सांची	9997461377
51	एसएएफ हॉस्पिटेलिटी (उत्तराखण्डी व्यंजन)	श्री राकेश सिंह	9719766785

फोटो गैलरी

SWACHHTA
CHAUPAL

SWACHHTA
CHAUPAL
KEY HIGHLIGHTS

SWACHHTA
CHAUPAL

What are ECO BRICKS?

SWACHHTA
CHAUPAL

G20

SWACHHTA
CHAUPAL

SWACHHTA
CHAUPAL

DOON CANTT
SWACHHTA
CHAUPAL
A conclave on

SWACHHTA
CHAUPAL

DOON CANTT
SWACHHTA
CHAUPAL
A conclave on
WASTE MANAGEMENT, TECHNOLOGY & CIRCULARITY

मीडिया कवरेज

महिंद्रा ग्राउंड में तीन और चार फरवरी को होगी स्वच्छता चौपाल

- छावनी परिषद देहरादून आयोजित कर रहा है ये कार्यक्रम
- विभिन्न नवाचारी तकनीक की भी लगाई जाएगी प्रदर्शनी

जागरण संवाददाता, देहरादून: छावनी परिषद देहरादून आगामी तीन व चार फरवरी को महिंद्रा ग्राउंड में स्वच्छता चौपाल का आयोजन करेगा। जिसमें अपशिष्ट प्रबंधन, कूड़ा निस्तारण, कूड़े का जैविक उपचार (बायो रेमेडिएशन), बिजली उत्पादन सहित कई और पहलू पर विचार-विमर्श होगा। इसमें स्वच्छता से संबंधित विभिन्न मशीनों, तकनीकी समाधान व विभिन्न नवाचारी तकनीक की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। स्वच्छता चौपाल का उद्घाटन राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेनि) गुरमीत सिंह करेंगे।

छावनी परिषद के मुख्य अधिशासी अधिकारी अभिनव सिंह ने बताया कि कूड़ा प्रबंधन आज एक चिंतनीय विषय हैं। उत्तराखंड एक पहाड़ी राज्य है, इसलिए यहां की आवश्यकताएं भी अलग हैं। इस ओर चिंतन की प्रक्रिया तेज करने और नवाचारी तकनीक के समावेश के लिए यह आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि शहरी विकास विभाग के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में देशभर की कंपनियां हिस्सा लेंगी। स्वच्छता चौपाल में प्रदेश के विभिन्न निकायों से अधिकारियों और निर्वाचित सदस्यों को आमंत्रित किया गया है। साथ ही पंचायती राज विभाग से भी आग्रह किया गया है कि वह भी संबंधित अधिकारी और निर्वाचित सदस्यों इस कार्यक्रम में भेजे।

इस दौरान उत्तराखंड में अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता के क्षेत्र में स्टार्टअप, वैकल्पिक स्वच्छता तकनीक, सफाई कर्मचारियों की समस्याएं आदि पर पैनल डिस्कशन भी होगा। इससे कूड़ा प्रबंधन व निस्तारण के लिए राज्य स्तर पर किए जा रहे विभिन्न प्रयासों को धार मिलेगी। वहीं, इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर साझा रणनीत बनाने में भी यह आयोजन मददगार होगा।

उत्तराखंड की खबरें पढ़ें www.jagran.com/state/uttarakhand

Segregate waste at home to help us: Sanitation workers

Tanmayee.Tyagi
@timesgroup.com

Dehradun: Sanitation workers in the city have claimed that despite improvements in the field, they are still exposed to hazardous waste disposed of incautiously, and demanded waste segregation at the household level.

The sanitation workers said during a session at the Doon Cantt Swachhta Choupal that waste segregation happens at the trenching ground or at collection points, but resources including time, money, and manpower can be saved if source segregation happens. "At times, we are exposed to medical and hazardous waste which is disposed of with regular garbage. With experience, we now know what packets may be harmful, but occasionally accidents do happen," said Arti Devi, a sanitation worker.

Amit Sharma

Sanitation workers say they often get exposed to hazardous and medical waste, which wouldn't happen if they were separated at source

Vinod Kumar, cleanliness superintendent at the Dehradun cantonment board, said, "In the last 20 years, a lot of things have changed in the field of waste management. Compared to earlier years, we are now treated better by the public. However, many things still need to change."

The Swachhta Choupal concluded on Saturday with the launch of a tech competition.

Cantt Board CEO Abhinav Singh said, "We have participation from 51 companies and startups that are working in the field of waste management." Cabinet minister Premchand Agarwal lauded the effort and said that it was important to take these initiatives throughout the state.

Several speakers underlined the fact that waste should be seen as a resource instead of a problem.

चौपाल में माउंटेन स्वच्छता चैलेंज लॉन्च

कैंट स्वच्छता चौपाल का कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने किया समापन

dehradun@inext.co.in

PIC: DAINIK JAGRAN I NEXT

चौपाल में ली स्वच्छता की शपथ.

DEHRADUN (4 Feb): गढ़ी कैंट स्थित कैंट स्वच्छता चौपाल का शनिवार को उत्तराखंड को स्वच्छ और सुन्दर बनाने के संकल्प के साथ संपन्न हुआ. चौपाल के दूसरे दिन माउंटेन स्वच्छता टेक्नोलॉजी चैलेंज लॉन्च किया गया. इस चैलेंज के माध्यम से कंपनियों, स्टार्ट अप्स और छात्र-छात्राओं को ऐसी तकनीकी ईजाद करने की दिशा में काम करने के लिए कहा गया, जो पहाड़ी ढलानों से कचरा कलेक्ट करने में सक्षम हो. मुख्यमंत्री की गैर मौजूदगी में कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने स्वच्छता चौपाल का समापन किया. कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने समापन समारोह की अध्यक्षता की, जबकि विधायक सविता कपूर विशिष्ठ अतिथि के रूप में मौजूद थी. वक्ताओं ने इस बात को मुख्य रूप से रेखांकित किया कि कचरे को समस्या के बजाय संसाधन बनाएं.

धारणा में आएगा बदलाव

स्वच्छता चौपाल के दूसरे दिन की शुरुआत चौपाल पर चर्चा स्वच्छता एक पाठ से हुई. चर्चा में हिस्सा लेने वाले वक्ताओं ने इस तरह की पहल का स्वागत किया. वक्ताओं का कहना था कि कंपनियों के लिए अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए यह मंच महत्वपूर्ण साबित होगी और कचरे को लेकर आम जनमानस में जो धारणा है, उसमें बदलाव आएगा. वक्ताओं ने स्वच्छता चौपाल को कूड़े की नुमाइश के रूप से रेखांकित किया. कचरा सेग्रीगेशन को चर्चा का चौपाल में स्वच्छता का मूल मंत्र बताते कहा गया कि कचरे को समस्या के बजाय संसाधन बनाने की दिशा में काम किया जाना चाहिए. इससे एक तरफ जहां जगह-जगह बिखरे कचरे की समस्या हल होगी, वहीं दूसरी तरफ कचरे से आर्थिक लाभ भी हो सकेगा.

For more news log on to
www.inextlive.com/dehradun

हिल्स में कैसे हो गार्बेज मैनेजमेंट, किया जाएगा मंथन

कैंट स्वच्छता चौपाल के दूसरे दिन इस बात पर खास तौर पर चर्चा हुई कि अब तक स्वच्छता के लिए जो मशीने बनी हैं, वे मैदानी क्षेत्रों के लिए है, पर्वतीय और हिमालयी क्षेत्रों में पहाड़ी ढलानों और दुर्गम पहाड़ियों से कचरा कलेक्ट करने की अभी कोई तकनीकी उपलब्ध नहीं है. माउंटेन स्वच्छता टेक्नोलॉजी चैलेंज के माध्यम से स्वच्छता के लिए मशीनें बनाने वाली कंपनियों के साथ ही स्टार्ट अप्स और विद्यार्थियों को इस तरह की कोई तकनीकी ईजाद करने के लिए प्रेरित किया गया, जिससे कि दुर्गम पहाड़ी ढलानों से कचरा कलेक्ट किया जा सके.

अनुभव किए साझा

दिन का पहला पैनल डिस्कशन स्वच्छ स्टार्ट अप और इनोवेशन के उभरते परिदृश्य पर केन्द्रित था. इस पैनल डिस्कशन में तीन सफल स्टार्ट-अप के संस्थापक सदस्यों ने कचरा प्रबंधन पर अपने अनुभव साझा किये और इस क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के साथ ही इन समस्याओं के समाधान भी सुझाये. कार्यक्रम के आखिरी पैनल डिस्कशन में स्वच्छता कार्यकर्ताओं के निजी जिन्दगी में सामने आने वाली समस्याओं और जटिलताओं पर था. इस पैनल डिशक्शन में चार ऐसे सफाई मित्रों को सामने लाया गया जो कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. इन कार्यकर्ताओं ने सफाई के काम में आमतौर पर सामने आने वाली समस्याओं के बारे में अपने अनुभव बताये. जिन 51 कंपनियों ने चौपाल में आयोजित प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया. समापन समारोह में उन्हें सर्टिफिकेट दिये गये. मुख्य अतिथि और अन्य अतिथियों ने कंपनियों के लिए इस कार्यक्रम को महत्वपूर्ण बताया.

स्वच्छता के असली सिपाही हैं सफाई कर्मचारी : राज्यपाल

कार्यक्रम में बोलते राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि.)। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

राज्यपाल ने गढ़ी कैंट स्थित महिंद्रा ग्राउंड में किया स्वच्छता चौपाल का उद्घाटन

देहरादून। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि.) ने गढ़ी कैंट स्थित महिंद्रा ग्राउंड (शहीद जसवंत सिंह मैदान) में कैंट बोर्ड की ओर से आयोजित दो दिवसीय स्वच्छता चौपाल का उद्घाटन किया। उन्होंने सफाई कर्मियों को स्वच्छता का सच्चा सिपाही बताया। कहा कि पर्यटन व तीर्थटन के लिहाज से उत्तराखंड के लिए स्वच्छता के खास मायने हैं।

शुक्रवार को कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल ने कहा कि स्वच्छता में ही ईश्वर का वास होता है। जिस प्रकार हम अपने घर को साफ रखते हैं, उसी प्रकार गली-मोहल्लों को भी साफ रखें। कहा कि अब समय आ गया है कि प्लास्टिक और वेस्ट मेटेरियल पर गंभीरता से विचार किया जाए। राज्यपाल ने इंदौर के स्वच्छता मॉडल की तारीफ करते कहा कि स्वच्छता के लिए सभी की सहभागिता जरूरी है। अपशिष्ट प्रबंधन व कूड़ा निस्तारण में तकनीक के समावेश को उन्होंने प्रभावी बताया।

उन्होंने कहा कि स्वच्छता मित्रों का सम्मान बेहद जरूरी है, क्योंकि ये ईश्वर के सबसे बड़े दूत हैं, जो हमारे आसपास स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग देते हैं। यह कार्यक्रम शहरी विकास निदेशालय के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। एसडीसी फाउंडेशन इसमें नॉलेज पार्टनर की भूमिका निभा रहा है।

इस मौके पर महानिदेशक रक्षा संपदा अजय कुमार शर्मा ने समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। कैंट बोर्ड सीईओ ने बताया कि कार्यक्रम समाप्त होने के बाद एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाएगी। इस रिपोर्ट को केंद्र व राज्य सरकार, सभी नगर निकायों और कैंट बोर्ड के साथ ही अन्य हितधारकों के साथ साझा किया जाएगा।

उद्घाटन सत्र में निदेशक रक्षा संपदा डॉ. डीएन यादव, कैंट बोर्ड के अध्यक्ष ब्रिगेडियर अनिर्बन दत्ता, निदेशक शहरी विकास नवनीत पांडे, सोशल डेवलपमेंट फॉर कम्युनिटी फाउंडेशन (एसडीसी) के अध्यक्ष अनूप नौटियाल, कैंट बोर्ड के मुख्य अधिशासी अधिकारी अभिनव सिंह आदि मौजूद रहे।

स्वच्छता को अपनी जिम्मेदारी मानें आमजन: जोशी

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

■ कैंट बोर्ड की ओर से दो दिवसीय दून कैंट स्वच्छता चौपाल कार्यक्रम का समापन

■ वेस्ट मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी और स्वच्छता की थीम पर आधारित रही चौपाल

कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री गणेश जोशी ने शनिवार को कैंट बोर्ड की ओर से गढ़ी कैंट स्थित महिंद्रा ग्राउंड में दो दिवसीय दून कैंट स्वच्छता चौपाल के समापन कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। वेस्ट मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी और स्वच्छता की थीम पर आधारित इस चौपाल में प्रदेश के नगर निकाय और पंचायत प्रतिनिधियों समेत देशभर के स्वच्छता उपकरण निर्माण कंपनियों और स्टार्टअप प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। प्रदेश में पहली बार इस तरह की चौपाल का यह आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री जोशी ने कहा स्वच्छता चौपाल के माध्यम से ठोस कचरा प्रबंधन से जुड़े सभी लोगों को ईस क्षेत्र में हो रहे नये कार्यों, रुझानों और तकनीकों को समझने व उन पर अमल करने के लिए एक बेहतर प्रयास किया गया है। साथ ही लगातार बढ़ते कचरे की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए सबसे बेहतर तकनीक की तलाश कर रहे सरकारी अधिकारियों, नोडल अधिकारियों व अन्य सभी संबंधित लोगों को चौपाल में नये उत्पादों और नई तकनीकी से परिचित होने का अवसर प्राप्त होगा।

यह चौपाल उद्यमियों और नवोन्मेषकों को स्वच्छता और प्रदूषण मुक्त वातावरण तैयार करने के लिए नवाचार करने में सहयोग करेगी। इसके साथ ही छावनियों और शहरी स्थानीय निकायों के सामने ठोस कचरे को लेकर आने वाली चुनौतियों को समझने और उनका समाधान तलाशने का अवसर भी प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक स्वच्छता की इस मुहिम से जोड़ कर स्वच्छता को एक देशव्यापी अभियान देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बनाया है।

उन्होंने कहा भारत देश को विकास की नई राह पर ले चलने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बापू के जन्म दिवस दो अक्टूबर 2014 स्वच्छता का एक देशव्यापी अभियान छेड़ा। जिसका प्रतिफल यह स्वच्छता चौपाल है, जिसमें हम सभी यहां आकर प्रतिभाग कर रहे हैं। उन्होंने कहा सार्वजनिक स्वच्छता के लक्ष्य को शतप्रतिशत प्राप्त करने तथा आने वाले पीढ़ियों के लिए एक ज्यादा बेहतर राष्ट्र बनाने के लिए आधुनिक तकनीक अत्यधिक जरूरी है। मंत्री जोशी ने कैंट बोर्ड सीईओ को बधाई देते हुए कहा कि स्वच्छता की मुहिम में सबसे ज्यादा जरूरी कड़ी स्वच्छता के प्रति सबके नजरिए में बदलाव लाना है।

उन्होंने स्वच्छता चौपाल में पहुंचे सभी टेक्नोलॉजी पार्टनरों से आह्वान करते हुए कहा कि ऐसे तकनीकी उपकरण बनाएं, जो इस राज्य की भौगोलिक बनावट के अनुकूल भी हों और निकायों के बजट में भी आते हों।

उन्होंने कहा जब तक हम स्वच्छता को अपने व्यवहार का हिस्सा नहीं बनाएंगे तब तक संस्थाओं के प्रयास कम ही साबित होंगे। उन्होंने कैंट बोर्ड से स्वच्छता के प्रति जागरूकता एवं प्रचार प्रसार और व्यवहार परिवर्तन के लिए विशेष प्रयास करने और पर्यावरण मित्रों को जो इस अभियान की इंफैंट्री ब्रिगेड है उन्हें प्यार और सम्मान जरूर दें।

इस अवसर पर शहरी विकास मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल, कैंट विधायक सविता कपूर, निदेशक शहरी विकास नवनीत पाण्डे, ब्रिगेडियर अर्नवान दत्ता, सीईओ कैंट बोर्ड अभिनव सिंह, अनूप नौटियाल, विष्णु गुप्ता, मेघा भट्ट, राजेंद्र कौर सौंधी सहित कई लोग उपस्थित थे।

स्वच्छता की शपथ लेते कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी व प्रेमचंद अग्रवाल।

स्वच्छता: दून में अनूठी चौपाल

PIC: DAINIK JAGRAN I NEXT

राज्यपाल ने किया राज्य की पहली स्वच्छता चौपाल का उद्घाटन

चौपाल में राज्यभर के निकाय प्रतिनिधि हुए शामिल

गवर्नर ने किया चौपाल का इनॉग्रेशन.

dehradun@inext.co.in

DEHRADUN (3 Feb): स्वच्छता को लेकर दून में एक अनूठी चौपाल शुक्रवार को शुरू हुई. राज्यपाल ले.ज. सेवानिवृत्त गुरमीत सिंह ने आर्मी ग्राउंड गढ़ी कैंट में इस चौपाल का उद्घाटन किया. चौपाल का पहला दिन वेस्ट मैनेजमेंट, टेक्नोलॉजी और स्वच्छता संबंधी विभिन्न विषयों पर आयोजित सम्मेलन के लिए समर्पित रहा. चौपाल में राज्य के दूर-दराज तक के जिलों के नगर निकाय प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया. स्वच्छता उपकरण बनाने वाली देशभर की कंपनियों और स्टार्टअप्स ने चौपाल में आयोजित प्रदर्शनी में हिस्सा लिया.

'स्वच्छता में ईश्वर का वास'

कैंट स्वच्छता चौपाल का उद्घाटन गवर्नर ले.ज. (रिटायर्ड) गुरमीत सिंह ने किया. इस मौके पर महानिदेशक, रक्षा सम्पदा अजय शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद थे. गवर्नर ने अपने संबोधन में कहा कि ईश्वर का वास वहीं होता है, जहां स्वच्छता होती है. उन्होंने दून छावनी परिषद को प्लास्टिक कचरे के रिसाइकिलिंग जैसी विभिन्न स्वच्छता पहलों के लिए बधाई दी. उन्होंने कहा कि उत्तराखंड पर्यटन और तीर्थाटन के रूप में लगातार लोकप्रिय हो रहा है, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हमारा राज्य स्वच्छ रहे और यहां आने वाले लोग इस राज्य से एक अच्छी छवि अपने साथ लेकर लौटें. उन्होंने कहा कि कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में जिस तरह से कई कंपनियां अपने उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन करने के लिए आई हैं, यह स्वागत योग्य है. इससे साफ होता है कि हम बदल रहे हैं और हम सभी स्वच्छ भारत के लिए प्रतिबद्ध हैं. राज्यपाल ने प्रदर्शनी में भाग लेने वाली कंपनियों को बधाई दी. विशिष्ट अतिथि अजय शर्मा ने सभी से प्लास्टिक कचरा और कचरा प्रबंधन के लिए एकजुट होकर संकल्प लेने की अपील की.

पहले दिन दो पैनल डिसकशन

चौपाल का पहला सत्र उत्तराखंड में सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट के नाम रहा. इसका संचालन पत्रकार अनुपम त्रिवेदी ने किया. इस सत्र में ब्रिगेडियर अनिर्बन दत्ता, मुनि की रेती नगर पालिका के अध्यक्ष रोशन रतूड़ी और जीआईजेड प्रोजेक्ट अविरल के तकनीकी सलाहकार नितेश चंद्राकर पैनलिस्ट के रूप में मौजूद थे. पैनलिस्ट ने स्रोत से ही सूखे और गीले कचरे को अलग करने के साथ ही कचरे के प्रति लोगों को संवेदनशील और जागरूकता करने की जरूरत पर जोर दिया. दूसरे सत्र में स्वच्छता तकनीकी और विकल्प: अवसर और चुनौतियां विषय पर चर्चा की गई. इस सत्र में वैली कल्चर की सह संस्थापक सुश्री शिखा प्रकाश, मॉडरेटर श्री. ईएसईएफओ क्लीनटेक प्राइवेट लिमिटेड के सलाहकार रोहित कुमार, स्क्रूस अप इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक सुमेध भोज और शायना ईको यूनिफाइड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सह संस्थापक नितिन श्रीवास्तव पैनलिस्ट के रूप में मौजूद थे. इस सत्र में पैनलिस्टों ने स्वच्छता कार्यकर्ताओं के जीवन में तकनीकी के महत्व को लेकर चर्चा की.

प्रदर्शनी में 51 कंपनियां

चौपाल में आयोजित प्रदर्शनी में नेफ्रा, एटीरो, रीसाइकिल, साहस जैसे कई प्रसिद्ध राष्ट्रीय संगठन और पेड केयर, स्क्रूस अप और शायना जैसे प्रमुख स्टार्ट अप्स भी प्रदर्शनी में भाग ले रहे हैं. पीएम नरेंद्र मोदी ने हाल ही में उत्तराखंड स्थित ई-वेस्ट रिसाइकिलर कंपनी एटेरो की पेटेंट तकनीक का जिक्र मन की बात में किया था. चौपाल में मौजूद कई स्टार्ट अप्स केंद्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं और शार्क टैंक इंडिया कार्यक्रम में भी भागीदारी कर चुके हैं. प्रदर्शनी में कुल 51 स्टॉल लगाये गये हैं.

अधिकारी-कर्मचारी स्वच्छता पर समझें अपनी जिम्मेदारी

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

■ राज्यपाल ले. जनरल गुरमीत सिंह ने महिंद्रा ग्राउंड में किया स्वच्छता चौपाल का शुभारंभ

■ शहरी विकास विभाग, कैंट बोर्ड और एसडीसी फाउंडेशन ने आयोजित किया कार्यक्रम

प्रदेश के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेनि) गुरमीत सिंह ने कहा कि पर्यटन व तीर्थाटन के लिहाज से भी उत्तराखंड के लिए स्वच्छता के खास मायने हैं। धार्मिक व पर्यटक स्थलों पर साफ-सफाई रखना बेहद जरूरी है। इसके लिए अधिकारियों व कर्मचारियों को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। कहा कि इससे पर्यटकों की संख्या में और अधिक वृद्धि होगी और राज्य की आर्थिकी भी बढ़ेगी।

यह बात राज्यपाल ने शुक्रवार को गढ़ी कैंट स्थित शहीद जसवंत सिंह मैदान (पूर्व में महिंद्रा ग्राउंड) में छावनी परिषद देहरादून की ओर से आयोजित स्वच्छता चौपाल के शुभारंभ अवसर पर कही। यह कार्यक्रम शहरी विकास निदेशालय के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है, जिसमें एसडीसी फाउंडेशन नालेज पार्टनर की भूमिका निभा रहा है। राज्यपाल ने कहा कि स्वच्छता में ही ईश्वर का वास होता है। जिस प्रकार हम अपने घर को साफ रखते हैं, उसी प्रकार गली-मोहल्लों को भी साफ रखें।

उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि प्लास्टिक और वेस्ट मेटेरियल पर गंभीरता से विचार किया जाए और जन-जागरूकता फैलाई जाए। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 से देश में स्वच्छता को लेकर एक नई क्रांति की शुरुआत हुई है, जिसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन के रूप में आगे बढ़ाया। यह शुरुआत है और आने वाले समय में बदलाव की यह लहर दूर तक जाएगी। राज्यपाल ने इंदौर के स्वच्छता माडल की तारीफ करते कहा कि स्वच्छता के लिए सभी की सहभागिता जरूरी है। अपशिष्ट प्रबंधन व कूड़ा निस्तारण में तकनीक के समावेश को उन्होंने प्रभावी बताया।

कहा कि स्वच्छता मित्रों का सम्मान बेहद जरूरी है, क्योंकि वह ईश्वर के सबसे बड़े दूत हैं जो हमारे आसपास स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग देते हैं। राज्यपाल ने विश्वास जताया कि इस स्वच्छता चौपाल के माध्यम से सभी नगर निकायों के प्रतिनिधि एक संकल्प लेकर जाएंगे और अपने क्षेत्र को स्वच्छ बनाकर उसको उत्कृष्ट बनाएंगे। स्वच्छता होगी तो विचार भी स्वच्छ होंगे और स्वच्छ विचारों से ही देश सशक्त होगा।इस अवसर पर रक्षा संपदा महानिदेशक अजय कुमार शर्मा, निदेशक डा.डीएन यादव, कैंट बोर्ड के अध्यक्ष ब्रिगेडियर अनिर्बन दत्ता, शहरी विकास निदेशक नवनीत पांडे, एसडीसी फाउंडेशन के अध्यक्ष आदि थे।

स्वच्छता चौपाल के उद्घाटन अवसर पर राज्यपाल ले. जनरल गुरमीत सिंह व अन्य।

केंद्र व राज्य सरकार से साझा करेंगे रिपोर्ट

छावनी परिषद देहरादून के मुख्य अधिशासी अधिकारी अभिनव सिंह ने बताया कि कार्यक्रम में स्वच्छता को लेकर पैनल डिस्कशन आयोजित किए जा रहे हैं। इनमें स्वच्छता के क्षेत्र में काम करने वाले लोग अपने अनुभव साझा करेंगे। पहले दिन उत्तराखंड में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन व स्वच्छता तकनीक और विकल्प, अवसर और चुनौतियां विषय पर पैनल डिस्कशन हुए हैं। इसके अलावा स्वच्छता चौपाल पर चर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। बताया कि कार्यक्रम समाप्त होने के बाद एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाएगी। इस रिपोर्ट को केंद्र व राज्य सरकार के साथ ही सभी नगर निकायों और कैंट बोर्ड व अन्य हितधारकों के साथ साझा किया जाएगा।

वेस्ट को बनाया बेस्ट मेटेरियल

स्वच्छता चौपाल में प्रदर्शनी भी लगाई गई है, जिसमें कूड़ा निस्तारण की मशीन, स्वच्छता उपकरण, बायोडीग्रेडेबल उत्पाद, प्लास्टिक वेस्ट से बने उत्पाद, बायो फ्यूल आदि के 51 स्टाल लगाए गए। राज्यपाल ने इन स्टालों का निरीक्षण कर आधुनिक उपकरणों व प्लास्टिक वेस्ट से बने उत्पादों की जानकारी ली।

दून में तीन और चार फरवरी को आयोजित होगी स्वच्छता चौपाल

जागरण संवाददाता, देहरादून: छावनी परिषद देहरादून की ओर से तीन व चार फरवरी को स्वच्छता चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। राज्य में पहली बार इस तरह की आयोजन किया जा रहा है, जिसमें स्वच्छता पर काम करने वाले विशेषज्ञ, मशीनें आदि बनाने वाले उद्योग, स्वच्छता के लिए जिम्मेदार अधिकारी व स्थानीय निकायों के प्रमुख एक मंच पर होंगे। छावनी परिषद के मुख्य अधिशासी अधिकारी अभिनव सिंह ने बताया कि महिंद्रा ग्राउंड (शहीद जसवंत सिंह मैदान) में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम का उद्घाटन राज्यपाल ले. जनरल (सेनि) गुरमीत सिंह करेंगे।

उन्होंने बताया कि यह एक अभिनव प्रयोग है। काफी समय से इस तरह का कार्यक्रम आयोजित करने के बारे में विचार किया जा रहा था। इसमें स्वच्छता के क्षेत्र काम करने वाली संस्थाओं और लोग के साथ ही स्वच्छता के मामलों के तकनीक विशेषज्ञ, उपकरण बनाने वाली कंपनियों और स्टार्टअप, उन उपकरणों के विक्रेता और उन्हें खरीदने वाले सरकारी विभाग और नगर निकाय एक जगह एकत्रित होंगे। यह कार्यक्रम उत्तराखंड शहरी विकास निदेशालय के सहयोग और से आयोजित किया जा रहा है और देहरादून स्थित थिंक टैंक एसडीसी फाउंडेशन स्वच्छता चौपाल में नालेज पार्टनर की भूमिका निभा रहा है। मुख्य विशेषता यह है कि इसमें राज्य के सभी नगर निकायों के कमिश्नर, चेयरमैन, महापौर और अध्यक्ष शामिल होंगे। पंचायती राज विभाग से जुड़े अधिकारी व कर्मचारी भी इस चौपाल में शामिल होंगे।

चौपाल में स्वच्छता को लेकर चार पैनल डिस्कशन आयोजित किए जाएंगे। जिनमें स्वच्छता के क्षेत्र में काम करने वाले लोग अनुभव साझा करेंगे। प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी।

Important to keep cities & tourism sites clean: Lt Gen Singh

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 3 Feb: Governor Lt General Gurmit Singh (Retd) inaugurated the two-day "Doon Swachhta Chaupal", a conclave on sanitation, organised by the Dehradun Cantonment Board at Mahindra Grounds, here, today.

On this occasion, the Governor also inspected various stalls and inquired about waste disposal equipment made with modern technology and products made from plastic waste. Appreciating the stalls engaged in the programme, the Governor noted that various institutions and social organisations convert the waste material into useful material, a highly commendable effort.

Congratulating the Cantonment Board for this event, he said that the time has come to seriously deal with plastic and waste material and spread public awareness about it.

The Governor said that, from the 2014, a new revolution regarding cleanliness had started in the country, which has been taken forward by the Prime Minister in the form of 'Swachh Bharat Mission'. He said that this is the beginning of change and this wave would go far in the coming times. He also expected all the urban bodies and panchayat chiefs present to make their urban bodies cleaner by adopting the Indore model in their respective areas.

The Governor said it is very important to respect Swachhta Mitras to maintain sanitation and cleanliness. Swachhata Mitras are the biggest messengers of God, who help society in maintaining cleanliness. He said that India is moving forward as a developed nation. Uttarakhand is also moving fast in various fields. The Governor said that there are immense possibilities for tourism in Uttarakhand, but to promote tourism, it is very important to keep the tourist places clean. There would be further increase in the number of tourists in Uttarakhand's religious and tourist places as a result of greater cleanliness, through which the economy of the state would also improve further.

Singh asserted that he had confidence that through this two-day chaupal, the representatives of all the municipal bodies would take a resolution and make their area cleaner and better.

Director General, Defence Estates, Ajay Kumar Sharma, Director, Defence Estates, Dr DN Yadav, Cantt Board President Brig Anirban Dutta, Director, Urban Development, Navneet Pandey, Social Development for Community Foundation (SDC) President Anoop Nautiyal, Cantt Board Chief Executive Officer Abhinav Singh were among those present on the occasion.

हमारे प्रतिभागियों ने क्या कहा!

आपको उद्योगों, स्थानीय लोगों और हॉस्पिटेलिटी उद्योग से जुड़े अधिक लोगों को आमंत्रित करना चाहिए।

आशुतोष गुप्ता
हिमालयन ग्रीन्स, नहान
himalayagreens.com

इस तरह के आयोजन में और अधिक भागीदारी बढ़ाने के लिए इसका ज्यादा प्रचार- प्रसार किया जाना जरूरी है।

मोनिका
मालिक, अरज फैशन, दिल्ली
arajfashion.com

ऐसे कार्यक्रम अधिक से अधिक बार होने चाहिए तथा स्वयं सहायता समूह के साथ बेहतर ढंग से प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।

रोनित बनर्जी
प्रोजेक्ट प्रंबधक, ग्लोबल डब्ल्यू एम सी इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, देहरादून

स्थानीय उद्यमियों, गैर सरकारी संगठनों और समुदाय आधारित संगठनों की भागीदारी को प्रोत्साहित कर इस आयोजन को और भी सफल बनाया जा सकता है।

तपन कुमार मोहंता
मुख्य प्रोजेक्ट संचालक, रिसाइकल, तेलंगाना
recykal.com

बेहतर नेटवर्किंग के लिए निर्णय निर्माताओं के साथ अधिक जुड़ाव होना चाहिए।

खुशबू सिंह
सेल्स एण्ड मार्केटिंग, पैडकेयर लैब्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
padcarelabs.com

ऐसे कार्यक्रम नियमित होने चाहिए इससे काफी मदद मिलेगी।

सुनीता चौधरी
अध्यक्ष, पूजा शिव महिला स्वयं सहायता समूह

इस तरह के आयोजन और अधिक फायदे के लिए साल में दो या उसके अधिक बार किये जाने चाहिए।

विनोद मनचंदा
ट्रैक मार्क इंटरनेशनल, चंडीगढ़

इस तरह के आयोजन के लिए अधिक प्रचार और हितधारकों की सहभागिता की आवश्यकता होती है।

डॉ0 रूबी मखीजा
संस्थापक, व्हाय वेस्ट वेडनसडेज, नई दिल्ली
whywastewednesdays.com

यह एक शानदार आयोजन था लेकिन बेहतर विज्ञापन से दर्शकों की संख्या और अधिक बढ़ती।

साची
विपणन रणनीतिकार, ग्राम हार वूमेन वर्ल्ड, देहरादून

सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी पुरस्कार

प्रथम विजेता
अटेरो रिसाइकलिंग प्राइवेट लिमिटेड

द्वितीय विजेता
स्प्रूस अप इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड

तृतीय विजेता
पैडकेयर लैब्स

“पृथ्वी हमें अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं मिली है, हम इसे हमारे बच्चों से उधार लेते हैं।”

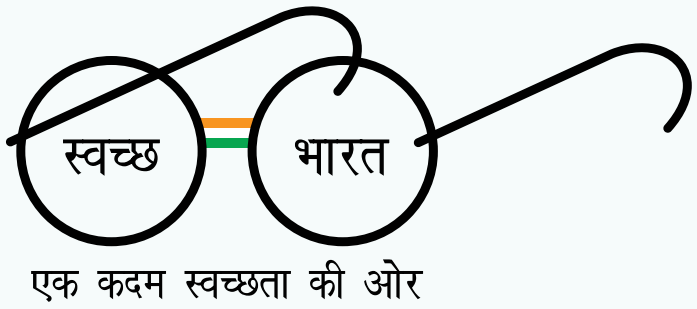

एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
DEFENCE

छावनी परिषद
देहरादून
CANTT BOARD
DEHRADUN

G20
भारत 2023 INDIA

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Supported By
Urban Development
Directorate,
Govt. of Uttarakhand

Knowledge Partner
Social Development
for Communities
FOUNDATION

दून कैन्ट स्वच्छता चौपाल

देहरादून छावनी बोर्ड का कार्यालय
गढ़ी, देहरादून कैंट (यूके) 248003

0135-2756814
ceodehr-stats@nic.in
0135-2759860
dehradun.cantt.gov.in